Follow us on : bharatbhaskar.com

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

भारत भास्कर

हर खबर का असर

डाक पंजीयन - छ.ग. / रायपुर संभाग / 58 / 2021-2023

● वर्ष : 15 ● अंक-240 ● रायपुर, शुक्रवार 29 सितम्बर 2023 ● पृष्ठ : 8 ● मूल्य-2 रूपये ● रायपुर, नागपुर, भोपाल, लखनऊ एवं दिल्ली से प्रकाशित ● RNI-CHHHIN/2009/29179

सूर्योदय 6.22
सूर्यास्त 5.38
भाद्रपद शुक्ल पक्ष
पक्ष- पूर्णिमा

3 कबाड़ से जुगाड़ विकासखंड स्तरीय प्रदर्शनी का हुआ आयोजन

5 विधानसभा चुनाव संबंध में जिला निर्वाचन अधिकारी ने राजनैतिक दलों, अधिकारी कर्मचारियों के ली बैठक

7 कलेक्टर ने किया जिले के दूरस्थ इलाकों का सघन दौरा, अधिकारियों को दिए आवश्यक निर्देश

सुविचार

इस दुनिया मे नमुमकिन कुछ भी नही, हम वो सब कर सकते हैं जो हम सोच सकते हैं और हम वो सब सोच सकते हैं जो हमने कभी नहीं सोचा।
-स्वदेश तिवारी

संक्षिप्त समाचार

प्रतिमा विसर्जन के दौरान बड़ा हादसा: 11 बच्चे पानी में बहे, डूबने से चार की मौत

दतिया। मध्यप्रदेश के दतिया जिले में गणेश प्रतिमा विसर्जन के दौरान चार बच्चों की डूबने से मृत्यु हो गयी। पुलिस सूत्रों के अनुसार शहर से कुछ दूर स्थित बिड़निया गांव में शाम को कुछ बच्चे प्रतिमा विसर्जन के लिए गए थे। वहां पर 11 बच्चे पानी से भरे गड्ढे की गहरायी में डूबने लगे। छह बच्चों को वहां मौजूद लोगों ने बचा लिया, लेकिन चार को नहीं बचाया जा सका और उनकी मौत हो गई। जबकि एक की तलाश अभी जारी है। घायल बच्चों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मृत बच्चों की उम्र 12 से 16 साल के बीच है। इनकी पहचान अंश, प्रतिज्ञा, कृष्णा और आस्था के रूप में हुयी है। जिला प्रशासन ने पीड़ित परिवारों को नियमों के अनुरूप आर्थिक सहायता मुहैया कराने के निर्देश दिए हैं। शहर की सिविल लाइंस थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस हादसे पर दुख व्यक्त करते हुए मृत बच्चों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की है।

पंजाब में कल से जालंधर समेत 12 स्थानों पर किसान संगठन करेंगे रेल रोको आंदोलन

चंडीगढ़। पंजाब में हाल में आई बाढ़ से हुए नुकसान के लिए आर्थिक पैकेज, न्यूनतम समर्थन मूल्य के लिए कानूनी गारंटी और कर्ज माफी समेत अपनी मांगों के समर्थन में कई किसान संगठनों ने पंजाब में तीन दिवसीय रेल नाकाबंदी की घोषणा की। इस निर्णय की घोषणा किसान मजदूर संघर्ष समिति के महासचिव सरवन सिंह पंधेर ने 19 किसान संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक के बाद की। हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के कुछ संगठन भी आंदोलन का समर्थन करेंगे। पंधेर ने कहा कि किसान अन्य मुद्दों के अलावा उत्तर भारत में बाढ़ प्रभावित लोगों के लिए आर्थिक पैकेज, सभी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की कानूनी गारंटी और कर्ज माफी की मांग कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब के मोगा, होशियारपुर, गुरदासपुर, जालंधर, तरनतारन, संगरूर, पटियाला, फिरोजपुर, बठिंडा और अमृतसर में 12 स्थानों पर 'रेल रोको' आंदोलन किया जाएगा।

बाहुबली रामाधीर की पूरी जिंदगी जेल में गुजरेगी, हाईकोर्ट ने हत्याकांड में बरकरार रखी उम्रकैद की सजा

रांची। यूपी के बलिया से लेकर झारखंड के धनबाद कोयलांचल में बाहुबली माफिया के रूप में चर्चित रहे रामाधीर सिंह को पूरी जिंदगी जेल में गुजारनी पड़ेगी। झारखंड हाईकोर्ट ने धनबाद में वर्ष 1998 में ट्रेड यूनियन लीडर विनोद सिंह और उनके ड्राइवर मन्नू अंसारी की हत्या के मामले में निचली अदालत से सुनाई गई उसकी उम्र कैद की सजा बरकरार रखी है। रामाधीर सिंह यूपी के बलिया में जिला परिषद का अध्यक्ष रह चुका है।

कृषक सह श्रमिक सम्मेलन....

छत्तीसगढ़ सरकार के योजनाओं का लाभ जनता को मिल रहा...

- किसानों, पशुपालकों की सुविधा के लिए समय से पूर्व ही कर रहे न्याय योजनाओं की राशि का अंतरण
- राजीव गांधी किसान न्याय योजना: 24.52 लाख किसानों को जारी हुई 1895 करोड़ रुपए की तीसरी किश्त

रायपुर/ संवाददाता

गरीबों के आर्थिक उत्थान के लिए छत्तीसगढ़ सरकार बहुत अच्छा काम कर रही है। न्याय योजनाओं के चलते बीते पांच सालों में 40 लाख लोग गरीबी रेखा से बाहर आ गये हैं। सवा दो लाख करोड़ रुपए की राशि सीधे हितग्राहियों के खाते में अंतरित की गई है। छत्तीसगढ़ सरकार की सभी योजनाओं का भरपूर लाभ आम जनता को मिल रहा है। यह बात राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष श्री मल्लिकार्जुन खड़गे ने बलौदाबाजार-भाटापारा जिले के सुमाभाठा में आयोजित कृषक सह श्रमिक सम्मेलन के अवसर पर कही। सम्मेलन में राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष श्री खड़गे और मुख्यमंत्री श्री बघेल ने श्रमिकों के कल्याण के लिए मुख्यमंत्री निर्माण श्रमिक पेंशन सहायता योजना का शुभारंभ भी किया। इस योजना में दस साल तक पंजीकृत रहे एवं 60 वर्ष की आयु पूरी कर चुके निर्माणी श्रमिकों को जीवन पर्यंत प्रति माह 15 सौ रुपए की पेंशन सहायता दी जाएगी। इसके साथ ही प्रदेश के 24 लाख 52 हजार 592 किसानों को राजीव गांधी किसान न्याय योजना के 1895 करोड़ रुपए अंतरित किए। साथ ही गोधन न्याय योजना के 65 हजार गोबर विक्रेताओं को 5 करोड़ 16 लाख रुपए की राशि और 33 हजार 642 गन्ना उत्पादक किसानों को 57 करोड़ 18 लाख रुपए प्रोत्साहक राशि भी उनके खाते में डाली गई है। सम्मेलन में 1 लाख 2 हजार 889 हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत 55 करोड़ 76 लाख 26 हजार रुपए राशि का वितरण किया गया। इनमें छत्तीसगढ़ असंगठित कर्मकार सामाजिक सुरक्षा मंडल के 2881 हितग्राहियों को 3 करोड़ 86 लाख रुपए, छत्तीसगढ़ श्रम कल्याण मंडल के 3236 हितग्राहियों को 1 करोड़ 65 लाख रुपए तथा छत्तीसगढ़ भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार मंडल के 96 हजार 772 हितग्राहियों को 50 करोड़ 24 लाख रुपए की राशि का वितरण किया गया। इस मौके पर बलौदाबाजार-भाटापारा के जिलेवासियों को 266 करोड़ रूपए की लागत के 264 विकास कार्यों की सौगात दी गई।मुख्यमंत्री श्री बघेल ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि राजीव गांधी किसान न्याय योजना की राशि आपकी सुविधा को ध्यान में रखते हुए आज 28 सितंबर को जारी की गई है। चूंकि आचार संहिता लगने के पश्चात निर्वाचन आयोग से इसके लिए अनुमति लेनी होती। इसमें विलम्ब की आशंका के चलते आज ही इसका भुगतान कर दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने 73 लाख लोगों को राशन से सुनिश्चित कराया है। युवाओं को 147 करोड़ बेरोजगारी भत्ते के रूप में दिए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि बिलासपुर में 7 लाख आवासों के लिए हितग्राहियों की पहली किश्त 25-25 हजार डालने का काम किया।

कहा-हमारे नेताओं के पीछे लगाते हैं सीआईडी

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकाअर्जुन खड़गे ने आज गुरुवार को भाटापारा में श्रमिक सम्मेलन में बीजेपी पर निशाना साधते हुए कहा कि मैं सुना आज रायपुर में जेपी नोएडा भी आए हैं। अमित शाह भी आए हैं। वो सोच रहे होंगे कि इस बलौदाबाजार में क्या चल रहा है। यहा सब हिसाब किताब रखते हैं। हमारे लोग कहां-कहां आते-जाते हैं, उसके पीछे बीजेपी की सीआईडी लगी रहती हैं, जो बताते है कि इतने लोग आए थे। उनको भी मालूम होगा कि आप इतने लोग जोश के साथ कांग्रेस पार्टी के पीछे हो, साथ हो और सीएम बघेल के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। कांग्रेस के पूरे मिनिस्टर एक होकर काम कर रहे हैं। एक होकर जब काम करते हैं, तो कोई हटा नहीं सकता। जब एक लकड़ी रहती है, तो कोई भी तोड़ सकता है, लेकिन 10 लकड़ियां मिलकर हो तो कभी टूटता नहीं है। आज जो काम किया यह बहुत बड़ा काम है। उन्होंने कहा कि जब हमारी सरकार थी, हमने आनेक स्कीम सेंट्रल गवर्नमेंट में लाए थे। जितने भी स्कीम से प्रोजेक्ट फंड का हो, जो मजदूरों को मिलने का हक था उसे हमने देने की कोशिश की। अब भाजपा सरकार आने के बाद मजदूरों के जो कानून थे उनको कमजोर किया। सभी को कमजोर करते चले गए सिर्फअमीरों के लिए जो कानून बना उसको बनाते गए, उनको जो फायदा देना वह देते गए।

सुप्रीम कोर्ट ने दुष्कर्म और हत्या मामले में दिया फैसला

40 साल तक ट्रायल, 75 वर्षीय बुजुर्ग को जमानत...सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। एजेंसी

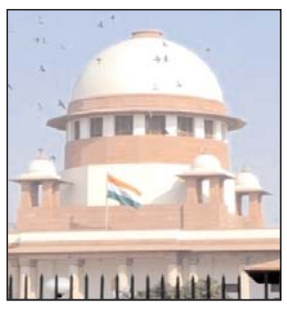

सुप्रीम कोर्ट ने 1983 के दुष्कर्म और हत्या के एक मामले में दोषी ठहराए गए 75 वर्षीय बुजुर्ग को जमानत दे दी। इस मामले में सबसे दिलचस्प बात तो यह है कि ट्रायल में 40 साल का समय लगा और सुप्रीम कोर्ट ने इस बात पर गौर करते हुए अपना फैसला सुनाया। सुप्रीम कोर्ट ने कलकत्ता हाई कोर्ट से 75 वर्षीय व्यक्ति की दोषसिद्धी के खिलाफ अपील को प्राथमिकता देने को कहा। जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस पंकज मिथल की पीठ ने इस मामले पर सुनवाई की। पीठ ने कहा कि आम तौर पर शीर्ष अदालत को किसी संवैधानिक अदालत या किसी अन्य अदालत को किसी मामले का फैसला करने के लिए कार्यक्रम तय करने का निर्देश जारी नहीं करना चाहिए। हालांकि, कोर्ट ने इस मामले के ट्रायल में 40 साल का समय लगने की वजह से हाई कोर्ट से इस मामले को प्राथमिकता देने की अपील की। हाई कोर्ट ने जमानत देने की अपील को खारिज कर दिया था। दरअसल, हाई कोर्ट ने रिकॉर्ड पर मौजूद सामग्री और अपराध की गंभीरता को देखते हुए कहा था कि हम अपीलकर्ता की सजा को रद्द करना ठीक नहीं समझते हैं। हाई कोर्ट ने अपने आदेश में कहा था कि यह मामला एक लड़की के साथ दुष्कर्म और हत्या से जुड़ा हुआ है। जिसकी एक कमरे में गला घोंटकर हत्या कर दी गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यह घटना 1983 में घटित हुई थी और ट्रायल में देरी के कई कारण हैं। 21 अप्रैल, 2023 में आरोपी को दोषी ठहराया गया और ट्रायल खत्म हो गया। अपीलकर्ता शुरू से ही जमानत पर था।

भाजपा ने गोवा मंत्रिमंडल में महिला विधायकों को शामिल करने की कांग्रेस की मांग ठुकराई

पणजी। भाजपा ने गोवा मंत्रिमंडल में महिला विधायकों को शामिल करने की कांग्रेस की मांग को खारिज कर दिया है। भाजपा ने कांग्रेस को जवाब देते हुए कहा कि क्या एक परिवार को दो कैबिनेट बर्थ दिए जा सकते हैं। कांग्रेस नेता गिरीश चोडनकर और विपक्ष के नेता यूरी अलेमाओ ने मांग की थी कि पार्टी महिला भाजपा विधायकों को मंत्रिमंडल में शामिल करें, क्योंकि भगवा पार्टी ने कहा था कि वे महिला आरक्षण विधेयक पारित करके महिलाओं को सशक्त बनाना चाहते हैं।

नितिन गडकरी बोले

साल के अंत तक राष्ट्रीय राजमार्ग होंगे गड्ढा मुक्त..

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने गुरुवार को कहा कि केंद्र सरकार इस साल के अंत तक सभी राष्ट्रीय राजमार्गों को गड्ढा मुक्त बनाने की नीति पर काम कर रही है। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि इस साल के अंत तक किसी भी राष्ट्रीय राजमार्गों पर कोई गड्ढा न रहे। नितिन गडकरी ने बताया कि ऐसी परियोजनाओं के तहत बिल्ट-ऑपरेट-ट्रांसफर मोड पर सड़कों के निर्माण को प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने कहा कि आमतौर पर प्रोक्योरमेंट एंड कंस्ट्रक्शन के तहत जो भी सड़कें बनाई जाती है, उसको रखरखाव की काफी जरूरत होती है, जबकि बिल्ट-ऑपरेट-ट्रांसफर के तहत सड़कों का निर्माण बेहतर ढंग से की जाती है। बीओटी के तहत ठेकेदार जानता है ।

श्री राजस्थानी सेवा संघ द्वारा हिंदी दिवस पर काव्य गोष्ठी संपन्न

मुंबई (भारत भास्कर)। राजस्थानी सेवा संघ द्वारा संचालित, श्रीनिवास बगड़का जूनियर कॉलेज (अंधेरी) द्वारा कॉलेज के सेमिनार हॉल में हिंदी पखवाड़ा दिवस मनाया गया । कॉलेज के विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न विषयों पर स्वरचित काव्य रचनाओं का पाठ किया गया। श्रीषा शर्मा की कर्णप्रिय सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम की शुरूआत हुई। प्रेमजीत मैम ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि एजुकेशन डायरेक्टर डॉ वनश्री वालेचा जी ने कहा कि जेजेटी यूनिवर्सिटी के चेयरपर्सन डॉ विनोद टिबड़ेवाल जी की अगुआई में विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के लिए एक नया मंच मिला है,हिंदी में वे खुद को अभिव्यक्त कर रहे हैं तथा संस्था के ट्रस्टी श्री विशाल टिबड़ेवाल जी के द्वारा हिंदी साहित्य मंच की स्थापना हुई है, जिसके लिये प्रिंसिपल श्री दिलीप दुबे सर सहित सभी शिक्षकों का बहुत बड़ा योगदान है। मैम व प्रिंसिपल सर ने अपने बहुमूल्य शब्दों से युवाओं के हौंसलों को बढ़ाया व प्रेरणा दी। अफीफ़ व ग्रीष्मा के खूबसूरत संचालन में रितिक,दक्ष, वर्षा,समरीन अंकिता,प्रफुल, पायल,सारा, साहिल,नुसरत,लक्ष्मी, आफ्रीन,ज्योति,धीरज,सारिका, अफीफ़, ग्रीष्मा, पूजा ,खुश्बू, संजना,प्रियंका व आफ्रीन ने अपनी सुंदर प्रस्तुतियों से सबका मन मोह लिया,तो लक्ष्मी ने हास्य रचनाओं से लोगों को लोटपोट कर दिया। कार्यक्रम में हिंदी टीचर मीनू नारँग,सरिता जैन सहित सुरेखा दलवी ,सीमा शिंदे,महावीर जैन,अलकेश यादव,अजय गुप्ता,सुशील दूबे,तबरेज खान,प्रेमसिंग,भानु पंड्या,नीलम सिंग,वर्षा बोराडे,पूजा खन्ना,मनीषा मेहता आदि शिक्षकगण उपस्थित थे। आभार व्यक्त किया सुमीता केशवा ने। अल्पाहार के साथ यह खूबसूरत काव्य गोष्ठी सम्पन्न हुई।

कुली के बाद अब कारपेंटर बने राहुल गांधी

फर्नीचर मार्केट में कारीगरों के साथ सांसद ने चलाई आरी.....

नई दिल्ली। एजेंसी

लोकसभा चुनाव 2024 की तैयारियों में लगे राहुल गांधी लगातार जमीनी स्तर पर लोगों से संपर्क करने में लगे हुए हैं। कभी कांग्रेस नेता किसानों के साथ धान की रोपाई करने पहुंच जा रहे हैं, तो कभी मैकेनिकों से मिलने के लिए पहुंच जाते हैं। वायनाड से कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने कुछ दिनों पहले आनंद विहार रेलवे स्टेशन के कुलियों से मुलाकात की थी। उस दौरान वह यात्रियों का सामान अपने सिर पर लादे नजर आए थे। कुली के ड्रेस वाली राहुल गांधी की तस्वीर सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुई थी। अब एक तस्वीर में राहुल गांधी बढ़ई बनकर आरी चलाते नजर आ रहे हैं। दरअसल, कांग्रेस सांसद ने दिल्ली के कीर्ति नगर में स्थित एशिया के सबसे बड़े फर्नीचर मार्केट में लकड़ी के कारीगरों से गुरुवार को मिलने पहुंचे। इस दौरान राहुल गांधी ने कारीगरों से बातचीत की है। राहुल गांधी कारीगरों से बातचीत के साथ-साथ लकड़ी पर हथौड़ा मारते हुए नजर आ रहे हैं। राहुल गांधी ने लकड़ी के कारीगरों से मुलाकात की तस्वीर अपने ङ्क (पूर्व में ट्विटर) अकाउंट पर भी शेयर किया है। कांग्रेस सांसद ने लिखा कि दिल्ली के कीर्तिनगर स्थित एशिया के सबसे बड़े फर्नीचर मार्केट जाकर आज बढ़ई भाइयों से मुलाकात की। राहुल गांधी ने कहा कि ये मेहनती होने के साथ ही कमाल के कलाकार भी हैं, मज़बूती और खूबसूरती तराशने में माहिर!

भीड़ को नियंत्रित करने के लिए दागने पड़े आंसू गैस के गोले

इंफाल में हिंसक विरोध प्रदर्शन, डीसी ऑफिस में तोड़फोड़.....

इंफाल। एजेंसी

जुलाई में लापता हुए दो युवकों के शवों की तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद मंगलवार को मणिपुर की राजधानी में छात्रों के नेतृत्व में हिंसा की एक ताजा घटना भड़क गई। दो युवकों की मौत पर हिंसक विरोध प्रदर्शन गुरुवार को भी जारी है। छात्रों के भीड़ ने इंफाल पश्चिम में उपायुक्त कार्यालय में तोड़फोड़ की और दो वाहनों को आग लगा दी। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।अधिकारियों ने कहा कि कल रात, प्रदर्शनकारी उरीपोक, याइस्कुल, सागोलबंद और तेरा इलाकों में सुरक्षा कर्मियों से भिड़ गए, जिसके बाद स्थिति को नियंत्रित करने के लिए बलों को कई राउंड आंसू गैस के गोले दागने पड़े। उन्होंने बताया कि प्रदर्शनकारियों ने सुरक्षा बलों को आवासीय इलाकों में प्रवेश करने से रोकने के लिए सड़कों को टायर, बोल्डर और लोहे के पाइप जलाकर अवरुद्ध कर दिया। भीड़ ने डीसी कार्यालय में भी तोड़फोड़ की और दो वाहनों को आग लगा दी। उन्होंने बताया कि सीआरपीएफ कर्मियों ने स्थिति को नियंत्रित किया। सुरक्षा बलों द्वारा हिंसक विरोध प्रदर्शनों का मुकाबला करने के लिए दो जिलों - इंफाल पूर्व और पश्चिम में फिर से कर्फ्यू लगा दिया गया है। इस हिंसा में मंगलवार से 65 प्रतिशत प्रदर्शनकारी घायल हो गए हैं। पुलिस ने कहा कि इस बीच, थौबल जिले के खोंगजाम में एक भाजपा कार्यालय में आग लगा दी गई। मणिपुर पुलिस ने एक बयान में कहा कि भीड़ ने एक पुलिस वाहन को निशाना बनाया और उसे आग के हवाले कर दिया, जबकि एक पुलिसकर्मी से मारपीट की और उसका हथियार छीन लिया। बयान में आगे बताया गया कि ऐसे अपराधों में शामिल लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी, छीने गए हथियारों की बरामदगी और आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। छात्रों के इस प्रदर्शन के बीच, मणिपुर बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने सुरक्षा बलों से किशोरों के खिलाफ मनमाने ढंग से लाठीचार्ज, आंसू गैस के गोले और रबर की गोलियों का इस्तेमाल नहीं करने का आग्रह किया है। आपको मालूम हो कि 3 मई को मणिपुर में जातीय हिंसा भड़कने के बाद से 180 से अधिक लोग मारे गए हैं और कई सौ घायल हुए हैं। बहुसंख्यक मैतेई समुदाय की अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने की मांग के विरोध में पहाड़ी जिलों में 'आदिवासी एकजुटता मार्च' आयोजित किया गया था। मणिपुर की आबादी में मैतेई लोगों की संख्या लगभग 53 प्रतिशत है और वे ज्यादातर इम्फाल घाटी में रहते हैं, जबकि नागा और कुकी सहित आदिवासी 40 प्रतिशत हैं और ज्यादातर पहाड़ी जिलों में रहते हैं। दरअसल, 6 जुलाई से लापता दो छात्रों की हत्या का विरोध कर रहे छात्र और स्थानीय लोगों से आरएएफ जवानों की मंगलवार रात झड़प हो गई थी। इसके बाद आरएएफने प्रदर्नकारियों के ऊपर आंसू गैस के गोले, रबर की गोलियां और लाठीचार्ज किया।जिसमें 45 छात्र घायल हो गए। प्रदर्शनकारियों में अधिकतर छात्र हैं।

केंद्र ने सीनियर आईपीएस अधिकारी राकेश बलवाल को मणिपुर भेजा

मणिपुर में जारी हिंसा के बीच केंद्रीय गृह मंत्रालय ने स्थिती को संभालने के लिए सीनियर आईपीएस अधिकारी राकेश बलवाल को मणिपुर भेजा है। जुलाई में लापता हुए दो छात्रों की नृशंस हत्या के बाद एक बार फिर मणिपुर में हिंसा भड़क उठी है। बुधवार को छात्रों और स्थानीय लोगों से सुरक्षाबलों की झड़प हो गई, जिसके बाद आरएएफने लाठीचार्ज किया। इसमे 45 लोग घायल हो गए।राकेश बलवाल 2012 बैच के मणिपुर कैडर के आईपीएस अधिकारी हैं। इस समय वह श्रीनगर के एसएसपी के पद पर तैनात थे। केंद्र सरकार ने बलवाल को समय से पहले ही मणिपुर उनके होम कैडर वापस भेज दिया है। गृह मंत्रालय द्वारा जारी एक आदेश के मुताबिक, राकेश बलवाल को समय से पहले एजीएमयूटी कैडर से उनके मूल राज्य में वापस भेजा गया है।

हमारे अच्छे कर्मों से खुश होते हैं भगवान

भगवान माला और माल से राजी नहीं होते, बल्कि हमारे कर्मों से प्रसन्न होते हैं। गीता निष्काम कर्मों के द्वारा मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताती है। श्रेष्ठ कर्मों को ही सच्ची भक्ति समझो। इसीलिए अपने कर्मों को ही पूजा बना लो। जिस प्रकार कमल के पत्ते पानी में रहते हुए भी जल को अपने ऊपर नहीं आने देते। ऐसे ही निष्काम कर्मयोगी संसार में रहते हुए भी कर्मों के बंधन तथा मोह में आसक्त नहीं होते है। गीता संसार को कर्मशील व पुरुषार्थी होने का संदेश देती है। वह हमारे मन में स्वार्थ, लोभ, अहंकार से ऊपर उठकर निष्काम व परोपकार के कर्मों की भावना जागृत करती है। वह श्रेष्ठ कर्म करते हुए इहलोक तथा परलोक दोनों के लिए उन्नति करने के लिए प्रेरणा देती है। हे मनुष्यों, वर्तमान जीवन और जगत को कर्मों की सुगंध से भरते चलो। कर्त्तव्य व दायित्व को ईमानदारी व कुशलता से निभाओ। गीता कह रही है- योगः कर्मसु कौशलम् अर्थात जो भी कर्म करो, उसको पूर्णता, निपुणता, सुन्दरता और कुशलता से करो। जो इस तरह से जीवन को जीता है, गीता के अनुसार वह इस जीवन व जगत को सफल कर लेता है और उसका अगला जन्म भी सुधर जाता है।

तन के श्रृंगार में ही जो समय गंवा देते हैं वह इस नाशवान संसार में भटक कर रह जाते हैं लेकिन जो मन का श्रृंगार कर उसमें बैठे परमात्मा की आराधना करते है वह संसार की मलिनता से बच जाते हैं, वस्तुतः दुर्गुणों से ही जीवन में मलिनता आती है। इनसे बचने का एकमात्र उपाय वेद शास्त्र और पुराणों का मंथन करना तथा सज्जनों की संगति है। अतः हमें अपने कर्मों पर ध्यान देते हुए जीवन जीना चाहिए।

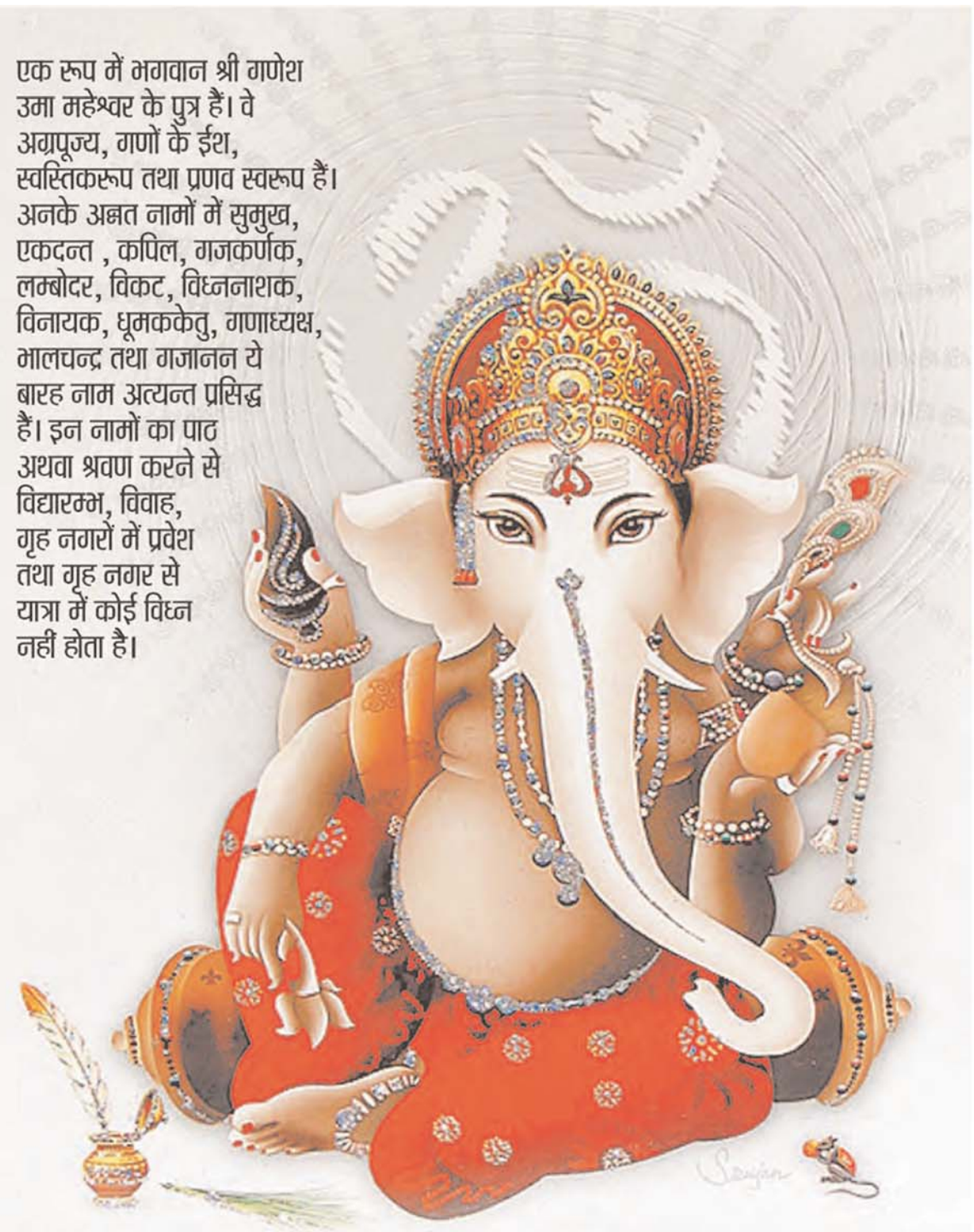

एक रूप में भगवान श्री गणेश उमा महेश्वर के पुत्र हैं। वे अग्रपूज्य, गणों के ईश, स्वस्तिकरूप तथा प्रणव स्वरूप हैं। अनके अन्नत नामों में सुमुख, एकदन्त , कपिल, गजकर्णक, लम्बोदर, विकट, विध्ननाशक, विनायक, धूमककेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र तथा गजानन ये बारह नाम अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। इन नामों का पाठ अथवा श्रवण करने से विद्यारम्भ, विवाह, गृह नगरों में प्रवेश तथा गृह नगर से यात्रा में कोई विध्न नहीं होता है।

ऐसे पाइए रिद्धि सिद्धि के दाता गणपति का आशीर्वाद...

भगवान गणेश का स्वरूप अत्यन्त ही मनोहर एवं मंगलदायक है। वे एकदन्त और चतुर्बाह हैं। अपने चारों हाथों में वे क्रमश पाश, अंकुश, मोदक पात्र तथा वर मुद्रा धारण करते हैं। वे रक्तवर्ण, लम्बोदर, शूर्पकर्ण तथा पीत वस्त्र धारी हैं। वे रक्त चंदन धारण करते हैं तथा उन्हें रक्त वर्ण के पुष्प विशेष प्रिय हैं। वे अपने उपासकों पर शीघ्र प्रसन्न होकर उनकी समम्त मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।

एक रूप में भगवान श्री गणेश उमा महेश्वर के पुत्र हैं। वे अग्रपूज्य, गणों के ईश, स्वस्तिकरूप तथा प्रणव स्वरूप हैं। अनके अन्नत नामों में सुमुख, एकदन्त , कपिल, गजकर्णक, लम्बोदर, विकट, विध्ननाशक, विनायक, धूमककेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र तथा गजानन ये बारह नाम अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। इन नामों का पाठ अथवा श्रवण करने से विद्यारम्भ, विवाह, गृह नगरों में प्रवेश तथा गृह नगर से यात्रा में कोई विध्न नहीं होता है।

भगवान गणपति के अनेक अवतार हुए हैं। उनके सभी चरित्र अनन्त हैं। पदम पुराण के अनुसार एक बार पार्वती जी ने अपने शरीर के मैल से एक पुरूषाकृति बनाई जिसका मुख हाथी के समान था। फिर उस आकृति को उन्होंने गंगा जल में डाल दिया। गंगा जल में पड़ते ही वह आकृति विशालकाय हो गई। पार्वती जी ने उसे पुत्र कहकर पुकारा देव समुदाय ने उन्हें गंगये कहकर सम्मान दिया और ब्रहमाजी ने उन्हें गणों का अधिपत्य प्रदान करके गणेश नाम दिया।

लिंग पुराण के अनुसार एक बार देवताओं ने भगवान शिव की उपासना करके उनसे सुरद्रोही दानवों के दुष्कर्म में विध्न उपस्थित करने के लिए वर मांगा। आशुतोष शिव ने तथास्तु कहकर देवताओं को संतुष्ट कर दिया। समय आने पर गणेश जी का प्राकट्य हुआ। उनका मुख हाथी के समान था और उनके एक हाथ में त्रिशुल तथा दूसरे में पाश था। देवताओं ने सुमन वृष्टि करते हुए गजानन के चरणों में बारम्बार प्रणाम किया। भगवान शिव जी ने गणेश जी को दैत्यों के कार्यों में विध्न उपस्थित करके देवताओं और ब्रह्माणों का उपकार करने का आदेश दिया।

प्रजापति विश्वकर्मा की सिद्धि बुद्धि नामक दो कन्याएं गणेश जी की पत्नियां हैं। सिद्धि से क्षेम और बुद्धि से लाभ नामक शोभा सम्पन्न दो पुत्र हुए। शास्त्रों और पुराणों में सिंह मयूर और मूषक को गणेश जी का वाहन बताया गया है। गणेश पुराण के क्रिड़ा खण्ड में उल्लेख है कि कृतयुग में गणेश जी का वाहन सिंह है। वे दस भुजाओं वाले, तेज स्वरूप तथा सब को वर देने वाले हैं और उनका नाम विनायक है। त्रेता में उनका वाहन मयूर है, वर्ण श्वेत है तथा तीनों लोकों में वे मयूरेश्वर नाम से विख्यात हैं और छ भुजाओं वाले हैं। द्वापर में उनका वर्ण लाल है। वे चार भुजाओं वाले और मूषक वाहन वाले हैं तथा गजानन नाम से प्रसिद्ध हैं। कलयुग में उनका धूम्रवर्ण है। वे घोड़े पर आरूड़ रहते हैं। उनके दो हाथ हैं तथा उनका नाम धूम्रकेतू है। मोदक प्रिय गणेश जी विद्या बुद्धि और समस्त सिद्धियों के दाता तथा थोड़ी उपासना से प्रसन्न हो जाते हैं। उनके जप का मंत्र ओम गं गणपतेय नमः है।

मनुष्य पांच तत्त्वों से बना है। इन तत्त्वों में से अग्नि विशेष है। जहां एक ओर अन्य सभी तत्त्व प्रदूषित हो सकते है, वहीं अग्नि को दूषित नहीं किया जा सकता।

पूजा पाठ के अंत में हवन करने का क्या कारण है?

सृष्टि के सभी तत्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु व आकाश के विभिन्न संयोजनों से बने हैं। जगत का ही एक अंश होने के कारण मनुष्य भी इन्हीं पांच तत्त्वों से बना है। इन तत्त्वों में से अग्नि विशेष है। जहां एक ओर अन्य सभी तत्त्व प्रदूषित हो सकते है, वहीं अग्नि को दूषित नहीं किया जा सकता।

हमारे ऋषि अग्नि की इस विशेषता से भली भांति परिचित थे और इसीलिए हवन और दूसरे सभी वैदिक कर्मों में अग्नि का विशेष महत्त्व होता है। हवन मात्र एक कर्मकांड नहीं बल्कि एक योगी के लिए उन दिव्य शक्तियों से वार्तालाप का माध्यम है जो इस सृष्टि को चलाती हैं। तो क्या इसका अर्थ यह हुआ कि वे तत्त्व शुद्ध नहीं हैं जिनसे मनुष्य बना है। जिस प्रकार इस संसार में पृथ्वी, जल, वायु व आकाश प्रदूषित हो जाते हैं, उसी प्रकार से मानव शरीर में भी इन तत्त्वों का प्रदूषित होना संभव है। यह प्रदूषण मनुष्य को पतन अथवा विकृति की ओर धकेलता है। मनुष्य में इन तत्त्वों के प्रदूषण का पता लगाना अति सरल है। पृथ्वी तत्त्व के दूषित होने से व्यक्ति को समाज में प्रतिष्ठित पद और भव्य जीवन शैली जैसी सुविधाएं पाने की इच्छाएं बेलगाम होने लगती हैं।

जब जल तत्त्व दूषित होता है तो अप्राकृतिक काम इच्छा जागृत होने लगती है। वैदिक शास्त्र अपनी स्वाभाविक इच्छाओं का दमन करने के लिए नहीं कहता। अग्नि तत्त्व को दूषित नहीं किया जा सकता। योग और सनातन क्रिया की साधना से साधक अग्नि तत्त्व के अनुकूल स्तर बनाए रख सकता है। वायु तत्त्व यह निश्चित करता है कि हृदय व फ़ेफड़े ठीक से कार्य करें। इस तरह रक्त संचार प्रणाली और श्वास प्रणाली भी सही काम करती रहती है। अंत में दूषित आकाश तत्त्व के कारण थायरायड व पैराथायरायड ग्रंथियों के रोग और श्रवण शक्ति का क्षीण होना पाया जाता है। मात्र एक हवन में ही यह क्षमता होती है कि मनुष्य के सभी दोष समाप्त हो सकें।

कैसे हनुमान जी आपका लॉकर सदा धन से भरा रखेंगे

जीवन की समस्त अवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन की आवश्यकता होती है। कुछ लोग कम मेहनत करने पर भी अधिक धन संचित कर लेते हैं तो कुछ लोगों को कड़ी मेहनत के उपरांत भी उनकी मेहनत के अनुरूप धन नहीं मिल पाता। कई लोग ऐसे होते हैं जो कमाई तो अच्छी कर लेते हैं, लेकिन आगे के लिए कुछ बचा नहीं पाते। अगर धन का अगमान ठीक भी हो तो बढ़े हुए खर्च के कारण धन संबंधी परेशानी बनी रहती है। आप जब भी बैंक जाए तो मन ही मन महालक्ष्मी के मंत्रों का जाप करें। ऐसा करने से बैंक में जमा पैसे पर महालक्ष्मी की कृपा बनी रहेगी और उस पैसे में निरंतर बढ़ौतरी होती रहेगी।

ऊँ महालक्ष्म्यै नमः, ऊँ ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

निम्न पंक्तियों का प्रतिदिन जाप करने से हनुमान जी के साथ साथ यम, कुबेर एवं अन्य देवी-देवताओं की भी कृपा प्राप्त होगी। कुबेर देव की अनुकम्पा से आपका लॉकर कभी खाली नहीं होगा और सदा धन से भरा रहेगा।

जम कुबेर दिगपाल जहां ते। कवि कोबिद कहि सके कहां ते।।

मां लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होने पर कुबेर जी अपना खजाना उनके भक्तों के लिए खोल देते हैं इसलिए मां लक्ष्मी के साथ साथ कुबेर जी का चित्र अथवा श्री रूप घर में स्थापित करें। वास्तु शास्त्र के मतानुसार मां लक्ष्मी और कुबेर जी का चित्र अथवा श्री रूप उत्तर दिशा की ओर स्थापित करें। इससे उत्तर दिशा सक्रिय होगी एवं धन आगमन में आने वाली समस्त बाधाओं का नाश होगा।

इन महाविद्याओं से सिद्धियों एवं मनोवांछित फलों की प्राप्ति होती है

शिवपुराण के मतानुसार भगवान शिव शंकर के दस अवतारों में आदशक्ति मां दुर्गा समस्त अवतारों में उनके साथ अवतरित हुई थी। दस महाविद्यायों के नाम से जानी जानें वाली महामाया मां जगत् जननी दुर्गा के ये दस रूप तांत्रिकों एवं उपासकों की आराधना का अभिन्न अंग हैं। इन महाविद्याओं के माध्यम से उपासक को बहुत सी सिद्धियों एवं मनोवांछित फलों की प्राप्ति होती है। मां दुर्गा एवं भगवान शिव शंकर के दस अवतार इस प्रकार हैं-

- भगवान शिव शंकर के महाकाल अवतार के समय देवी महाकाली के रूप में उनके साथ अवतरित हुई।
- भगवान शिव शंकर के तारकेश्वर अवतार के समय देवी तारा के रूप में उनके साथ अवतरित हुई।
- भगवान शिव शंकर के भुवनेश अवतार के समय देवी भुवनेश्वरी के रूप में उनके साथ अवतरित हुई।
- भगवान शिव शंकर के षोडश अवतार के समय देवी षोडशी के रूप में उनके साथ अवतरित हुई।
- भगवान शिव शंकर के भैरव अवतार के समय देवी जगदम्बा भैरवी के रूप में उनके साथ अवतरित हुई।
- भगवान शिव शंकर के छिन्नमस्तक अवतार के समय देवी छिन्नमस्ता के रूप में उनके साथ अवतरित हुई।
- भगवान शिव शंकर के ध्रूमवान अवतार के समय धूमावती के रूप में उनके साथ अवतरित हुई।
- भगवान शिव शंकर के बगलामुखी अवतार के समय देवी जगदम्बा बगलामुखी रूप में उनके साथ अवतरित हुई।
- भगवान शिव शंकर के मातंग अवतार के समय देवी मातंगी के रूप में उनके साथ अवतरित हुई।
- भगवान शिव शंकर के कमल अवतार के समय कमला के रूप में देवी उनके साथ अवतरित हुई।

सार-समाचार

प्रधानमंत्री आगमन की तैयारी में जुटे बड़े अफसर

भारत भास्कर रिपोर्टर

बिलासपुरः- 28 सितंबर को मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन एवं डीजीपी अशोक जुनेजा ने जिला कार्यालय के मंथन सभाकक्ष में प्रशासन व पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक लेकर माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 30 सितंबर को प्रस्तावित कार्यक्रम के मद्देनजर सुरक्षा एवं अन्य तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने एसपीजी की दिशानिर्देशों के अनुरूप सारी तैयारियां सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

आंगनबाड़ी सहायिका के पदों पर भर्ती हेतु आवेदन 13 अक्टूबर तक

भारत भास्कर रिपोर्टर/ बिलासपुरः- 28 सितंबर 2923 को एकीकृत बाल विकास परियोजना बिल्हा के अंतर्गत आंगनबाड़ी केन्द्र तिफरा क्र. 1 वार्ड क्रमांक 6, तिफरा केन्द्र क्र 8 वार्ड क्रमांक 8, बोदरी केन्द्र क्रमांक 1 वार्ड क्रमांक 5 एवं ग्राम पंचायत संबलपुरी क्रमांक 1 में आंगनबाड़ी सहायिका के रिक्त एक-एक पदों पर भर्ती हेतु आवेदन आमंत्रित की गई है। आवेदन करने की अंतिम तिथि 13 अक्टूबर है। इच्छुक आवेदिका अपना आवेदन कार्यालयीन समय में एकीकृत बाल विकास परियोजना बिल्हा के कार्यालय में जमा कर सकते हैं। इस संबंध में अधिक जानकारी के लिए नगर निगम कार्यालय, जनपद पंचायत बिल्हा एवं एकीकृत बाल विकास परियोजना बिल्हा के सूचना पटल का अवलोकन कर सकते हैं।

33/11 के.व्ही. नवीन उपकेन्द्र गोविंदपुर का ऊर्जीकरण

नन्दू यादव

सूरजपुर भारत भास्कर विगत वर्ष 6, 7, 8 मई 2022 को माननीय मुख्यमंत्री के जिला-सूरजपुर अंचल में भेंट मुलाकात जन चौपाल के दौरान की गई घोषणा के परिपालन में छ.ग.स्टे.पा. डि.क.लि. उप संभाग प्रतापपुर के गोविंदपुर में 33/11 के.व्ही. नये उपकेंद्र का लोकार्पण आज गुरुवार को अध्यक्ष योजना आयोग एवं विधायक डा. प्रेमसाय सिंह टेकाम अतिथियों के उपस्थिति में संपन्न हुआ।

इस उपकेंद्र के निर्माण में 33 के.व्ही. के 07 कि.मी. और 11 के.व्ही. के 6 कि.मी. लाइन एवं 1.3.15 एम.व्ही.ए. पावर ट्रांसफार्मर, लागत 270.16 लाख का कार्य मुख्यमंत्री अधोसंरचना विकास योजना 76 के अंतर्गत स्थापित कर उर्जीकृत किया गया। इस उपकेंद्र के उर्जीकरण से गोविंदपुर के आसपास के संबंधित 16 ग्राम पंचायत के ग्राम गोविंदपुर, नरोला, घुमाडांड, कटरा, डकई, करचोला, बोंगा, बड़वार, बरगीडीह, दुलदुली, घुई, बरपटिया, रमकोला, घुरिया, पेंड्री, भेलकछ के 2230 विद्युत उपभोक्ता, किसानों को समुचित वोल्टेज पर निर्बाध व गुणवत्तापुर्ण बिजली आपूर्ति का लाभ मिलेगा। अचल में नये उपकेंद्र निर्माण और नये लाइनों के सृजन से क्षेत्र की विद्युत प्रणाली को मजबूती मिलेगी, बिजली कम्पनी के अधिकारी कर्मचारियों के निरंतर सहयोग से किसान व ग्रामीण उपभोक्ताओं को विद्युत की बेहतर सुविधा उपलब्ध होगी एवं लो-वोल्टेज की समस्या से निजात मिलेगी।

इस कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर, मुख्य अभियंता शिरीष सेलेट अंबिकापुर (क्षेत्र), अधीक्षण अभियंता आर.के. ठाकुर बैकुंठपुर (वृत्त) के सभी अधिकारी कर्मचारियों को बधाई दी। 33/11 केव्ही. नये उपकेंद्र गोविंदपुर लोकार्पण अवसर पर गणमान्य अतिथिगण कुमार सिंह देव, जान साय मरावी, रेनसाय, कुंती नेताम सरपंच, बसंत सोम, सहायक अभियंता एखेस, कनिष्ठ अभियंता सदाब अहमद, लाइन कर्मचारी एवं एस.टी.एम. बैकुंठपुर की टीम उपस्थित रहे।

अटल के सपनों का छत्तीसगढ़ बनाएंगे : चंदेल

वोटर भूपेश सरकार को जोरदार झटका देंगेः- साव

तखतपुर में पीढ़ियों से हमारा परिवार और समर्थक : हर्षिता

भारत भास्कर रिपोर्टर

बिलासपुरः- भारतीय जनता पार्टी की परिवर्तन यात्रा का आज यहां पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया। भाजपा नेत्री हर्षिता पांडेय ने सभी अतिथियों को पारंपरिक खुमरी पहनाकर और यादव दंड भेंट कर स्वागत किया।

परिवर्तन यात्रा में शामिल होने आए सांसद पूर्व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी ने कांग्रेस इंडिया गठबंधन पर जमकर हमला बोला। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव ने कहा कि परिवर्तन

यात्रा को जनता का भरपूर समर्थन मिला है। लोगों ने इस बार भूपेश सरकार को बदलने का मन बना लिया है।

नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल ने कहा कि अटल का सपना था कि किसानों का यह छत्तीसगढ़ राज्य खुशहाली एवं संस्कृति से भरा रहेगा लेकिन इस सरकार के आने के बाद अटल के सपनों का छत्तीसगढ़ अब अपराध गढ़ हो गया है इसे हमें बदलना ही होगा। स्वागत भाषण देते

हुए हर्षिता पांडेय ने कहा की तखतपुर पिछले 6 दशकों से यहां हमारी विचारधारा की जीत होती आयी है। जनसंघ और जनता पार्टी के बाद भाजपा ने यहां अपना परचम लहराया है। यहां पीढ़ियों से समर्पित कार्यकर्ता हैं जो इस बार पुनः तखतपुर में बदलाव के लिए कमर कस चुके हैं। इस आमसभा को पुनुलाल मोहिले और धर्मजीत सिंह ने भी संबोधित किया। मंच पर पूर्व सांसद लखन लाल साहू, पूर्व विधायक राजू सिंग, तोखन साहू जिला प्रभारी मोतीलाल साहू, अनुराग सिंह देव, इंद्रजीत सिंह गोल्डी और अल्पसंख्यक मोर्चा के अध्यक्ष भी उपस्थित थे।

मनोज तिवारी ने गाना गा कर कांग्रेस सरकार पर किया प्रहार- उत्तर पूर्व दिल्ली से सांसद मनोज तिवारी बुधवार को भाजपा की परिवर्तन यात्रा- 2 में शामिल हुए। तखतपुर और बिल्हा विधानसभा क्षेत्र में आयोजित विशाल आमसभा को अपने ठेठ अंदाज में कविता, गाना गाकर उपस्थित जनसमुदाय से छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाने समर्थन मांगा। उन्होंने कहा कि जब मैं छत्तीसगढ़ी में कहते हुए सुनता हूं तो ऐसा लगता है जैसे भोजपुरी सुन रहे हैं। अपने अंदाज में कहा कि जिसने छत्तीसगढ़ की माताओं बहनों, युवा साथियों को दिया है धोखा उसको कैसे मिलेगा मौका उन्होंने कहा कि मैं बैठे - बैठे मंच पर एक कविता बना रहा था ये छत्तीसगढ़ का दर्द है जिसको कविता के रूप में पिरोया है। आऊ नई साहिबों बदल के रहियो, गांव गांव तैयारी हैं इसके खातिर आपके पास आया मनोज तिवारी है। मां, बहनें, बेटियों के मुंह से सुन रहे है कि अब परिवर्तन होगा।

राज्य स्तरीय छत्तीसगढ़िया ओलंपिक में 18 पदक हासिल कर रोशन हुआ सूरजपुर

06 गोल्ड, 04 रजत और 08 कांस्य पदक, सरगुजा संभाग के जिलों में सूरजपुर रहा प्रथम

नन्दू यादव

सूरजपुर भारत भास्कर राज्य स्तरीय छत्तीसगढ़िया ओलंपिक का समापन 27 सितंबर को रायपुर के सरदार बलवीर सिंह जुनेजा इंडोर स्टेडियम में संपादित हुआ। जिसमें सूरजपुर जिले के 141 खिलाड़ियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई थी, जिसमें 65 पुरुष व 76 महिला खिलाड़ियों ने 16 खेलों में अपनी प्रतिभा व कौशल का प्रदर्शन किया। जिसमें खिलाड़ियों द्वारा अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 18 पदक हासिल किया गया। जिसमें 06 गोल्ड, 04 रजत और 08 कांस्य से पदक खिलाड़ियों को विभिन्न खेलों में प्राप्त हुए। जिले के लिए यह भी उपलब्धि रही कि सरगुजा संभाग के अंतर्गत आने वाली जिलों में सूरजपुर में सबसे ज्यादा 18 पदक हासिल किया। संभाग में प्रथम, द्वितीय और तृतीय तीनों स्तर में सर्वाधिक पदक सूरजपुर जिले ने प्राप्त किया। जिले का रस्सी कूद, बांटी कंचा, सांगली, लंगडी दौड़ और बिल्लस जैसे खेलों में शानदार प्रदर्शन रहा। इस पर कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल ने

अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा छत्तीसगढ़ी ओलंपिक के राज्य स्तरीय आयोजन में प्रदेश के खिलाड़ी सम्मिलित हुए जिसमें जिले के खिलाड़ियों ने 18 पदक हासिल कर सूरजपुर का मान बढ़ाया है। जिसके लिए उन्होंने खेल विभाग व छत्तीसगढ़िया ओलंपिक के आयोजन को सफल बनाने वाले सभी संबंधित विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारियों को बधाई दी। उन्होंने छत्तीसगढ़िया ओलंपिक में भाग लेने वाले सभी खिलाड़ियों ,प्रशिक्षकों और खेल प्रेमियों की सराहना भी की।

संसदीय सचिव ने विभिन्न निर्माण कार्यो का किया शुभारंभ

नन्दू यादव

सूरजपुर भटगांव विधायक व संसदीय सचिव कुदरगढ़ पहुंचे माँ कुदरगढ़ी के चरणों मे माथा टेक इन्दरपुर चौक से कुदरगढ़ पहुंच मार्ग सड़क चौड़ीकरण 7.74 किलोमीटर एंव पुलिया निर्माण लागत 31 करोड़ 29 लाख रुपए के लागत से निर्माण कार्य का शुभारंभ किया जिसके बाद करीं कुप्पी से धरसेड़ी पहुंच मार्ग के निर्माण कार्य के शुभारंभ हेतु रवाना हुए। करीं कुप्पी में निवासरत लोग ने अपनी समस्या श्री पारसनाथ राजवाड़े के पास रखी जिसे उन्होने गंभीरता से सुना। उन्होने उपस्थित जनों से कहा कि आपके राषन आपके गांव पहुचेगा आपको 6 किलोमीटर दूर राशन लेने हेतु अन्य ग्राम में नहीं जाना पड़ेगा जिस पर तत्परता पूर्वक कार्य करते हुए विधायक राजवाड़े ने कार्य स्वीकृत कराया टेंडर पश्चात 16 करोड़ 27 लाख की लागत से बनने वाले सड़क की लम्बाई 14.10 किलोमीटर के निर्माण कार्य का शुभारंभ कर क्षेत्र की जनता को समर्पित किया। सड़क निर्माण कार्य के शुभारंभ पूजन में विधायक राजवाड़े के पंहुचने पर क्षेत्र की जनता ने उत्साह के साथ गर्मजोशी से

स्वागत किया कार्यक्रम में मनिहारिलाल पैकरा जनपद अध्यक्ष, ओड़गी उपाध्यक्ष शिवबालक राम यादव, ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष गौतम कुशवाहा,गोवर्धन सिंह,मुकेश अग्रवाल,अवधेश गुर्जर,प्रदीप राजवाड़े, लवकेश गुर्जर,सर्वेश चौबे, राजू यादव, चन्द्रभान राजवाड़े, हिमेन्द्र गुर्जर, विक्रांत पांडेय, दिलीप जायसवाल, पार्थ सिंह, नमस्ते सिंह, राजू सिंह,राजेश साहू, धर्मप्रसाद पटेल, मुनेश्वर राजवाड़े, धर्मजीत सिंह, दीपक, धर्मेंद्र, निरंतर राजवाड़े सहित क्षेत्र के सभी पंचायतों के सरपंच सचिव पी.डब्लू.डी. इंजीनियर मुख्यकार्यपालन अधिकारी ओड़गी रणवीर साय पैकरा सहित अन्य ग्रामीणजन उपस्थित

भाजपा नेता भुलन सिंह मरावी अपने समर्थकों के साथ पहुंचे दवना गणेश उत्सव में

नन्दू यादव

सूरजपुर भारत भास्कर प्रेमनगर विधानसभा क्षेत्र के भाजपा द्वारा घोषित प्रत्याशी भूलन सिंह मरावी इन दीनों विधानसभा क्षेत्र का ताबड़तोड़ दौरा करने में लगे हुए हैं चाहे वह पूजा पंडाल हो कर्मा त्यौहार हो या फिर छत्तीसगढ़ी कार्यक्रम हर जगह नेताजी अपनी उपस्थिति दर्ज करने में लगे हुए हैं इसी क्रम में ग्राम पंचायत दवना गणेश पूजा समिति के सौजन्य से रंगारंग छत्तीसगढ़ी कार्यक्रम का आयोजन किया गया था ज़ाहिर सी बात है ग्रामीण क्षेत्र में छत्तीसगढ़ी कार्यक्रम देखने के लिए लोगों का हुजूम उमर पड़ता है इस अवसर पर भाजपा प्रेमनगर विधानसभा के घोषित प्रत्याशी भूलन सिंह मरावी अपने खास समर्थक एवं पोड़ी सरपंच दरोगा सिंह के साथ कार्यक्रम में पहुंचे और आम जनता एवं क्षेत्र की खुशहाली के लिए भगवान विघ्न हर्ता श्री गणेश जी से प्रार्थना किए, इस अवसर पर श्री भुलन सिंह मरावी ने प्रेमनगर विधानसभा क्षेत्र सहित पूरे सरगुजा वासियों को गणेश उत्सव के हार्दिक

शुभकामनाएं प्रेषित किया है।

जगराता कार्यक्रम में पोड़ी सरपंच दरोगा सिंह सेन्दूरी सरपंच कवल साय सिंह दवना सरपंच अमर सिंह छोटे लाल पटेल राजधनी यादव सहित बड़ी संख्या में गांव के वरिष्ठ नागरिक दूर से आए हुए सम्मानित जन उपस्थित रहे

स्वास्थ्य शिविर का सुदूरवर्ती क्षेत्र खोंड में हुआ आयोजन

नन्दू यादव

सूरजपुर भारत भास्कर जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. आर. एस. सिंह के दिशा निर्देशन में बीएमओ डॉ. बंटी बैरागी के नेतृत्व में स्वयं उपस्थित होते हुए ओड़गी ब्लॉक के सुदूरवर्ती क्षेत्र खोंड के कन्या प्री मैट्रिक छात्रवास एवं कन्या हाई स्कूल में वृहद स्वास्थ्य शिविर का आयोजित हुआ, 80 छात्राओ का स्वास्थ्य जाँच कर उपचार एवं निदान किया गया। जिसमें स्वास्थ्य के बारे में जन जागरूकता किया गया, मौसमी बीमारियों के बारे में जानकारी दी गई, इस बीच खण्ड चिकित्सा अधिकारी डॉ. बंटी बैरागी, हृश्वरूक्क प्रभारी यू.आर. ध्रुव, सहायक ग्रेड श्री सुरजीत कुमार, कन्या छात्रावास अधीक्षक, अन्य सभी स्टाफ अधिकारी, कर्मचारी सहित स्कूल,

छात्रावास के सभी छात्राओ उपस्थित रहे।

कबाड़ से जुगाड़ विकासखंड स्तरीय प्रदर्शनी का हुआ आयोजन

नन्दू यादव

सूरजपुर भारत भास्कर राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के तहत कबाड़ से जुगाड़ विकासखंड स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय के प्रांगण में आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि जनपद पंचायत सदस्य बाबूलाल राजवाड़े, सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी सुनील कुमार पोर्ते, विकासखंड स्त्रोत समन्वयक मनोज कुमार मंडल, बीआरपी सुदर्शन राजवाडे की उपस्थिति में संपन्न हुआ। बाबूलाल राजवाड़े ने अपने उद्बोधन में कबाड़ से जुगाड़ के सभी मॉडलों की प्रशंसा की और छात्रों को शिक्षित व

चरित्रवान बनने की प्रेरणा दिए और उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुये चन्द्रयान जैसे खोज में उनकी सहभागिता के लिए प्रेरित किया। सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी श्री सुनील कुमार पोर्ते और बीआरसी श्री मनोज कुमार मंडल के द्वारा अपने उद्बोधन में कबाड़ से जुगाड़ के शैक्षणिक मॉडलों की प्रदर्शन की प्रतिस्पर्धा की प्रशंसा करते हुए इसकी उपयोगिता अध्ययन अध्यापन एवं कक्षा के विषय वस्तु के रूप में उपयोग करने हेतु प्रेरित किया गया। जिसमें विकासखंड के संकुलों से विज्ञान गणित और प्रौद्योगिकी के विभिन्न मॉडलों का प्रदर्शन किया गया। जिसमें सभी संकुलों से शिक्षको ने एक से एक बढ़कर विज्ञान गणित और प्रौद्योगिकी के मॉडल प्रदर्शित किया गया। सभी मॉडलों का निरीक्षण निर्णायक व्याख्याता राजेश सिंह, राधेश्याम सोनी, मुनव्वर हुसैन अंसारी के द्वारा किया गया। जिसमें गणित में प्रथम सुनीता यादव, दातिया, 2 द्वितीय संतोष केरकेट्टा, संकुल केंद्र करवा, विज्ञान में प्रथम ज्योति साहू नावापारा, द्वितीय योगेश कुमार कश्यप बसदेई, प्रौद्योगिकी में प्रथम स्थान ज्योति सिंह कन्दरई 2, द्वितीय प्रिया चौहान अजब नगर 1 नें स्थान प्राप्त किया सभी प्रतिभागियों को मोमेंटो और प्रशस्ति पत्र दिया गया। साथी सभी संकुलो के प्रतिभागियों को मेडल और प्रशस्ति पत्र दिया गया। कार्यक्रम में संकुल समन्वयक अनुज नारायण दुबे, अनुरागवेन्द्र सिंह बघेल ,जितेंद्र कुमार साहू ,शिवचंद साहू, संदीप कुमार कुशवाहा, रोशन लाल साहू, सहदेव राम रवि कीर्ति कौशल दुबे मुन्ना प्रसाद सोनी उपस्थित थे।

पांडेय जी और दुनियावी झोल

व्यंग्य

लालित्य ललित

पांडेय जी नियम के पक्के है,चाहे सैर हो ,दुश्मनी हो और प्रेम का प्राचीनकालीन लफ्ड़ा हो,मुस्तैदी से उसपर विचार करते है,यदि समझ में आ जाता है कि मामला क्या है!तो ठीक,अन्यथा रामखेलावन की टेबल पर खिसका देते है।

रामखेलावन चिंगपोकली थाने में हवलदार है,गुस्सैल है,लेकिन अपनी मेहरारू फुलमतियाँ से बेहद डरता है, डर मतलब सिट्टी पिट्टी गोल; आई बात समझ में।

आइए आगे बढ़ते है।

हुआ क्या कि विलायती राम पांडेय उसी थाने के दरोगा है,उन्होंने कहा कि नोएडा वाले थाने से एसपी साहब ने तलब किया है,बस इतना कहना था कि रामखेलावन के दस्त शुरू हो गए और वह भी बेमौसमी। न रुकते बने और न चलते बने,यहां मामला चलत मुसाफिर वाला था,आप अपनी क्षमता से मतलब और सरोकार लगाते रहिए,अपनी बला से।

बात यह हुई कि नोएडा का क्षेत्र काफी बड़ा है और वहां अनेक तरह की वारदात होती रहती है, सो इलाका भी बड़ा है तो थाना भी कई कई होगा,वैसे अपने विलायती राम पांडेय जी जेवर गांव से सटे थाने के दरोगा है,उनके आगे पोचनपुर गांव आता है,अब यह मत पूछने बैठना कि यह गांव कहां पड़ता है! क्या यह गांव परी चौक से आगे है! या एक्सप्रेस वे के पास से गुजरता है।

आप को बता दे कि एक बात बताई नहीं की आप पोछा पकड़ लेटे है।

पांडेय जी रहते दिल्ली में है और काम करते है नोएडा में,उनके दोस्त ने भी कहा है कई बार कि आप भी नोएडा में सेटल हो जाओ,लेकिन पांडेय जी कहते है कि पुरखो की जमीन पर रहने से ऐसा लगता है कि मानो उनकी छत्र छाया में रह रहे हो!

बहरहाल आगे बढ़ते है।

सुबह के समय। पांडेय जी पार्क का चक्कर लगा कर बेंच पर बैठे हैं।तभी उनके पास बुजर्ग बार यासीन खान आ कर बैठ गए,कहने लगे पांडेय जी आपके दर्शन करने से मन को बड़ा सकूं मिलता है, पांडेय जी ने कहा अरे। खान साहब कैसी बातें कर रहे हो! हम आप होते कौन हैं! खैर! यह आपकी जरा नवाजी है।

चलिए अब चलते है,आप के लिए तीन मिनट का समय था,वह आपको दिया।

दुआ सलाम के बाद पांडेय जी निकल पड़े अगले मुकाम पर।

थाने में हिंदी पखवाड़े का आयोजन था।दरोगा जी ने राधेलाल शर्मा को आमंत्रित किया था।राधेलाल जी डरते डरते थाने में घुसे।उनको लग रहा था कि मानो वे आज थाने में अपनी गुमशुदगी की रिपोर्ट करने आए हो।

कुछ अपराधी किसिम के लोगों ने घूरते हुए देखा,मानो आज इनकी नीलामी की जाएगी,अथवा इनके कल पुर्जों की पॉलिश की जाएगी।बहरहाल किस्सा कुछ अलग किसिम का है।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान कुछ सहमे सहमे से और कुछ भयभीत होते हुए राधेलाल जी मंच पर लाए गए।

उनके सामने वाली दीवार पर हाथकड़ी टंगी हुई थी,संगीन वाली बंदूके मुस्काती हुई इठला रही थी।कुछ जेबकतरे भीगी बिल्ली बने हुए थे, और कुछ सड़क छाप मुसाफिर थे,जो किसी न किसी मामले में वहां मौजूद थे।

मंच था,कुछ मालाएं थी।

राधेलाल शर्मा जी स्थानीय साहित्यकार थे।

अब विलायती राम पांडेय जी,दरोगा नोएडा ग्रामीण अंचल ने बोलना शुरू किया।

आज बड़ा खुशी का दिन है, कि सरकार के नियमों का पालन करते हुए हम भी अपने थाने में हिंदी पखवाड़ा मना रहे है,मंच पर राधेलाल शर्मा जी है,बड़े गुणी लेखक है,इनका लेखन समाज को एक नई दिशा देता है और इनकी अनेक पुस्तकें है जो दिशा प्रदान करती है,राधेलाल जी अनेक विदेश में आयोजित कार्यक्रमों में गए है,तकरीबन पच्चीस देशों की यात्राएं इन्होंने भाषा के संदर्भ में की है,आज हम गोरवान्वित महसूस कर रहे है,अपने बीच में इन्हें पा कर,

अब देखिए वैसे तो हम अपराधियों से घिरे रहते है,लेकिन आज समाज शास्त्री जी से घिरे है,तभी इशारा पाते ही थाने में मौजूद लोगों ने तालियां बजाईं।

एस आई अखिलेश गुप्ता ने माला पहनाते हुए उन्हें पुस्तकों का एक सेट भी भेंट किया।

कुछ देर में राधेलाल जी ने धारा प्रवाह कहते हुए कहा

आज थाने में पहुंच कर मुझे अच्छा लगा,यह जानकर कि आप लोग भी तनाव भरे माहौल में भाषा के प्रति कितने गंभीर है।

(दबे स्वर में भाषा के प्रति उन का समर्पण किसी से छुपा नहीं है)

राधेलाल शर्मा जी ने अपना ज्ञान,अपने जुमले प्रसारित किए,जो अपनी आदत के अनुसार वे हर सभा में प्रकट किया करते थे,बहरहाल राधेलाल शर्मा जी के हाथों हिंदी आशु लिपि प्रतियोगिता में प्रथम आई हवलदार देविका गजोधर,टिप्सी मुटरेजा को भी सम्मानित किया गया।

पांडेय जी थाने में बैठे है और यह सोच कर कि जब तक कोई कार्यक्रम नहीं होता,तब तक मुसीबत का पहाड़ सर पर होता है,और जब कार्यक्रम सम्पन्न हो जाता है तो लगता है की मानो बिटिया की विदाई हो गई हो।

बहरहाल जिंदगी के किस्से कई सारे है; इतना कहते ही पांडेय जी क्रियेटिव हो गए

राम राम जी / लालित्य ललित

सोच कर देखिए

इस एक शब्द में समूची मानवीयता छिपी है

जिस किसी को

आप नहीं जानते

वह आप को नहीं जानता

उसको एक बार राम राम जी कह कर देखो

देखिएगा इस शब्द में

कितनी शक्ति है

कितना चुम्बक भरा एहसास है

वह लौट कर आपको वापिस मिलेगा

शब्द प्रतिध्वनित होगा

यही आत्मीयता होती है शब्दों के सरोकार की

बहते हुए जल की

किसी नदी के जल के स्पंदन को महसूस करो

कितना दूर से वह आपको सुनाई देगा

यही आत्मीयता है सरोकार की

नदी के कल कल करते हुए जल की

सोच कर देखिए

निश्चल भाव से महसूस कर के देखें

देखें कि शब्दों का खिंचाव आपको अपनी ओर आकर्षित करेगा

बस एक बार आपकी भूमिका स्पष्ट होने की बात है

जब एक बार प्रीत लग जाएगी तो लक्ष्य स्पष्ट हो जाएगा

बस यही ताकत है प्रभु की

उसकी भक्ति की

और आपके समर्पण की

हरि ?।

पांडेय जी ने कुछ सोचा और दगड़ू को चाय के लिए बुला भेजा।

और दगड़ू को आते ही कहा,भिइए भिगो भिगो कर मारेंगे यदि चाय ठंडी लाए,कह देना पूनिया को तोड़ देंगे अगाडी पिछाड़ी

यदि चाय में कुछ गडबड हुई तो,

दगड़ू घबरा गया और कहने लगा,हजूर नाहक चिंता कर रहे है,आपके हुकुम की तालीम होगी।

पांडेय ने कहा पहले एक बात बात बता यह को भाषा बोल रहा है बे कहां से सीखी!

माई बाप कल रामानंद सागर का रामायण देखा था,बच्चों ने लगा लिया था,बस हजूर।

चल जा,चाय ले आ,जी जनाब।

सारे दिन थाने में डेल्टा चार्ली,डेल्टा चार्ली वाकी टोकी चिल्लाता रहता रुक रुक कर।

कभी कोई अर्दली आ कर सलाम ठोंकता और कभी कोई जेबकतरा ठुकता,थूकना भी उन शब्दों से अलग नहीं है।

तभी एसपी साहब नोएडा के जंग बहादुर गोडबोले का फोन बजा। पांडेय जी,

पांडे जी कुर्सी से जैसे ही उठे कि हाथ में पकड़ा चाय का कप छल छला उठा,जी सर,नमस्कार सर,आदेश।

उधर से एसपी सहाब ने कहा कि कल सुबह हरिद्वार चलना है,गोपनीय यात्रा है,तुम मैं और अपने भरोसे के दो चार अफसर जाएंगे।

पांडेय जी का दिमाग तेजी से चलने लगा।क्या पता उत्तराखंड से किसी को उठाना हो, एसपी सहाब को पता था कि इस तरह के कामों में दरोगा विलायती राम पांडेय को महारथ हासिल है।

फोन रखते ही तैयारी का आदेश पारित किया और दगड़ू को बुलाया

अबे कहां मर गया, मां के...।

दरोगा की आवाज थाने में गूंजी कि केंटीन का मालिक गुमसुम प्रसाद घबरा गया,दौड़ा चला आया,सहाब क्या हुआ! हम से कोई गलती हो गई,सरकार।

दरोगा ने कहा,नहीं,नहीं।कुछ उलझने है,तुम नहीं समझोगे,ऐसा करो,थाने में ब्रेड पकौड़े खिलाओ, कभी कभी कुछ खुशियां बांटने से बढ़ती है।

जंगबहादुर एसपी सहाब गाड़ी में है,दरोगा पांडेय जी मुस्तैदी में,क्या पता सहाब का दिमाग कब सनक जाएं!

जंगबहादूर कुछ बोलते, पांडेय जी ने कहा कि वहां चोटी वाले के कड़ी चावल स्वादिष्ट बनते है साहब।

जंगबहादुर ने कहा,दरोगा जी,अब पहली वाली बात नहीं रही, न जायका रहा और न स्वाद,ऐसा करो,ऋषिकेश वाले थाने में बृजेश भारद्वाज को फोन लगाओ और सारी व्यवस्था के लिए समझा दो।

पांडेय जी ने कहा जी,जी।

तभी रामप्यारी का फोन।उसने कहा कि कोई इमरजेंसी है,आप जल्द आ जाओ, पांडेय जी ने कहा अभी हरिद्वार में हूं,जल्दी आना संभव नहीं,सोमवार को इस विषय पर बात करते है।

ठीक है,रामप्यारी ने ठंडी सांस भरते हुए कहा,जैसे किसी रेस्टोरेंट में खाने के बिल के साथ 18 पर्सेंट सर्विस चार्ज लगा दिया हो,जबकि जीएस टी लगा दिया है तो एक्स्ट्रा टैक्स नहीं लगाया जा सकता,यही बदमाशी ये छोटे व्यापारी आजकल किया करते है।

तभी जंगबहादुर ने कहा दरोगा जी आज काम निबटा कर कल सुबह दिल्ली वापसी होगी।जी,जनाब।

पांडेय जी सोचने लगे,क्या पुलिस की नौकरी है,कुछ भी अपना सा नहीं लगता, न छुट्टी अपनी लगती और न ही परिवार।

घर जाने पर लगता है मानो किसी पड़ोसी के यहां आ गए हो,सब अपनी अपनी दुनिया में लगे है।इससे अच्छा तो किसी दफ्तर में बड़े बाबू होते,शाम को सब्जी या जलेबियां लेते हुए घर तो पहुंच जाते।

अब सोचने से क्या होगा! इति कथा,कथा अनंता।

संपादकीय

ये कैसा 'हार्ड स्टेट'?

नरेंद्र मोदी सरकार दुनिया में भारत की छवि हार्ड स्टेट की बनाना चाहती है। भाजपा का पुराना आरोप है कि अन्य पार्टियों के शासनकाल में भारत सॉफ्ट स्टेट था। लेकिन चीन की जब बात आती है, तो हार्ड स्टेट का वह नैरेटिव क्यों मद्धम पड़ जाता है? बीते जुलाई में चीन में वुशु वर्ल्ड कप का आयोजन हुआ था, तब चीन ने अरुणाचल प्रदेश के तीन एथलीटों को स्टेपल्ड वीजा दिया था। यानी उसने अन्य भारतीय नागरिकों को दिया जाना वाला सामान्य वीजा उन्हें देने से इनकार कर दिया था। तब भारत ने उस पर कड़ा विरोध जताया और वर्ल्ड कप टूर्नामेंट में भाग लेने से इनकार कर दिया। चीन जा रहे भारतीय खिलाड़ियों को तब हवाई अड्डे से लौटा लिया गया था। यह एक सही प्रतिक्रिया थी। कोई देश यह मंजूर नहीं कर सकता कि उसके किसी क्षेत्र को कोई अन्य देश इस तरह विवादास्पद बनाने की कोशिश की जाए। अब चीन ने वही हरकत एशियाई खेलों के सिलसिले में दोहराई है, लेकिन इस बार भारत की प्रतिक्रिया अलग नजर आई है। इस बार सिर्फ अरुणाचल के तीन खिलाड़ी चीन नहीं भेजे गए, जबकि बाकी पूरी टीम को वहां जाने दिया गया। फिर यह खबर आई कि विरोध जताने के मकसद से खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने उद्घाटन समारोह में भाग लेने का अपना कार्यक्रम रद्द कर दिया है। मुद्दा यह है कि जब पूरे टूर्नामेंट के बायकॉट के भारत के फैसले की चीन ने परवाह नहीं की, तो एक मंत्री के ना आने की वह कितनी परवाह करेगा? हालांकि ऐसा फैसला खिलाड़ियों के साथ बड़ा अन्याय होता, लेकिन किसी का कोई नुकसान राष्ट्र को होने वाली क्षति से बड़ा तो नहीं हो सकता। अगर भारत एशियाई खेलों के बहिष्कार का एलान करता, तो उससे चीन की मेजबानी पर जरूर एक धब्बा लगता- साथ ही उससे चीन के इस तरह के रवैये पर दुनिया में चर्चा भी होती। जहां तक खिलाड़ियो के साथ अन्याय की बात है, तो ऐसा जुलाई में वुशु के बाकी खिलाड़ियों के साथ भी हुआ था। एक जैसी ही घटना पर कोई देश अलग-अलग मौकों पर अलग रुख कैसे अपना सकता है? नरेंद्र मोदी सरकार दुनिया में भारत की छवि हार्ड स्टेट की बनाना चाहती है।

श्राद्ध पक्ष से जुड़ी एक संस्मरनात्मक रचना

शिबन कृष्ण रैणा

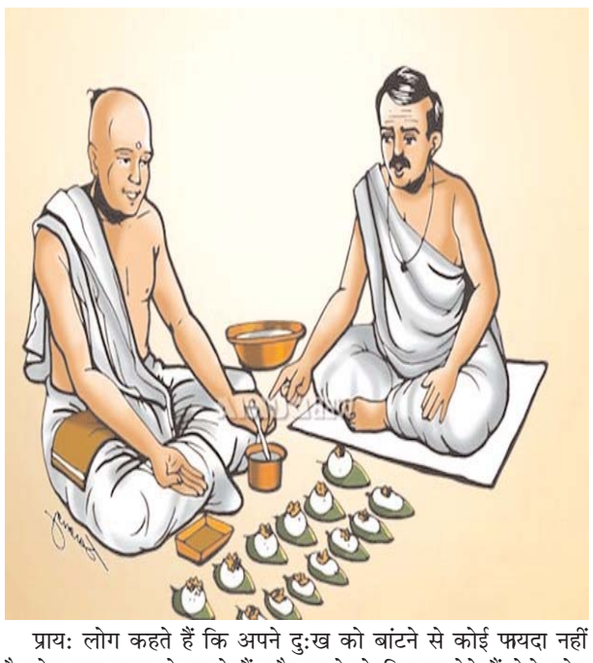

प्राय: लोग कहते हैं कि अपने दु:ख को बांटने से कोई फायदा नहीं है।लोग एक कान से सुनते हैं और दूसरे से निकाल देते हैं।ऐसे लोग रहीम का वह दोहा भी कोट करते हैं जिसमें रहीम कहते हैं कि 'रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय। सुनी इठलैहैं लोग सब, बांटी न लेंहैं कोय।अर्थात रहीम कहते हैं कि अपने मन के दु:ख को मन के भीतर छिपा कर ही रखना चाहिए।दूसरे का दु:ख सुनकर लोग इठला लेंगे,उसे बाँट कर कम करने वाला कोई नहीं होता।

बहुत पहले की बात है।मुझे अपने किसी ज़रूरी काम से दिल्ली के शास्त्री-भवन स्थित मानव-संसाधन-विकास मंत्रालय जाना पड़ा।मेरा कोई काम रुका हुआ था और सम्बंधित अधिकारी से मेरा मिलना ज़रूरी था।दिल्ली में जिस बस में मैं बैठा,ठीक मेरी बगल वाली सीट पर एक बुजुर्गवार पहले से बैठे हुए थे।बात चली और जब उनको पता चला कि मैं शास्त्री-भवन जा रहा हूँ और अमुक अधिकारी से मुझे मिलना है, तो उनका स्नेह जैसे मुझ पर उमड़ पड़ा।बोले हो जायेगा,हो जायेगा।काम हो जायेगा। इससे पहले कि मैं उनसे कुछ पूछता, वे उधर से बोल पड़े कि मेरे घर से हो के जाना।उनके लिए एक चिठ्ठी और प्रसाद दे दूंगा।वे दोनों चीज़े उन्हें दे देना। बड़े शहरों की चालाकियां मैं ने सुन-पढ़ रखी थीं।सोचा इन महाशय के साथ उनके घर जाना ठीक रहेगा कि नहीं?तभी ख्याल आया मेरे पास ऐसा कौनसा खजाना है जो यह बुज़ुर्ग आदमी मुझ से छीन लेगा।दो-दो हाथ करने की नौबत भी अगर आन पड़ी तो भारी मैं ही पड़ूँगा। बस रुकी और मैं उनके साथ हो लिया।उन्होंने अपने फ्लैट की बेल बजायी।भीतर से एक महिला ने दरवाज़ा खोला।'बहू,जल्दी से चाय बनाओ,इनको शास्त्री-भवन जाना है।दूर से आए हैं।वहां इनका कुछ काम है'।इस बीच उन्होंने फोन पर किसी से बात की।भाषा बंगला थी।मैं ने अंदाज़ लगाया कि ज़रूर मेरे बारे में ही बात की होगी क्योंकि जिस अधिकारी से मुझे मिलना था उसका सरनेम भी बंगाली था। समय तेज़ी से बीत रहा था।चाय पीकर मैं वहां से चलने को हुआ।वे महाशय मुझे नीचे तक छोड़ने आए और हाथ में एक लिफाफा पकडाया यह कहते हुए कि इसमें चिट्ठी भी है और प्रसाद भी।यह सम्बंधित महानुभाव को दे देना।काम हो जाएगा।यह भी ताकीद की कि लौटती बार मुझ से मिल कर जाना।अब तक सवेरे के लगभग ग्यारह बज चुके थे।ओटो-रिक्शा लेकर मैं सीधे शास्त्री-भवन पहुंचा।आवश्यक औपचारिकतायें पूरी करने के बाद मैं सम्बंधित अधिकारी से मिला।वे मेरा केस समझ गये।उन्होंने मेरी फाइल भी मंगवा रखी थी।मेरे केस पर सकारात्मक/अनुकूल कार्रवाई चल रही है,ऐसा आश्वासन उन्होंने मुझे दिया।जैसे ही मैं उठने को हुआ, मुझे बुज़ुर्ग-महाशयजी का वह लिफाफा याद आया।सोचा, दूँ कि नहीं दूँ।मन मैं खूब विचार करने के बाद निर्णय लिया कि नहीं,यह सब ठीक नहीं रहेगा।जो होना होगा हो जाएगा। शास्त्री-भवन से निकल कर मैं सीधे उन बुजुर्गवार से पुन: मिलने गया।वे जैसे मेरा इंतज़ार ही कर रहे थे।मुझे सीधे खाने की मेज़ पर ले गये।इस से पहले कि मैं कुछ कहता वे मेरे लिए थाली सजाकर उसमें तरह-तरह के पकवान रखने लगे।साग,पूड़ी,खीर,लड्डू आदि-आदि।मेरे से न कुछ कहते बना और न ही कुछ सुनते।वे मग्न-भाव से मुझे खिलाते रहे और मैं भी मग्न-भाव से खाता रहा।इस बीच मेरे कार्य की प्रगति सुनकर प्रसन्न हुए और दुबारा बोले कि काम हो जायेगा।जब उन्होंने मुझ से यह पूछा कि वह लिफाफा मैं ने दिया कि नहीं तो मेरे मुंह से 'नहीं' सुनकर वे मुस्कराए और बोले बहुत संकोची-स्वभाव के लगते हो। वे मुझे एक बार फिर नीचे छोड़ने के लिए आए।मेरे यह कहने पर कि आपने बहुत कष्ट उठाया मेरे लिए,मैं आभार व्यक्त करता हूँ और ऊपर से इतना बढ़िया भोजन कराया,इसे मैं भूल नहीं सकता।उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए जो बात कही वह मुझे अभी तक याद है: 'वह व्यक्ति ही क्या जो दूसरों के काम न आए। सेवा-भाव से बढ़कर और कोई धर्म नहीं है इस संसार में।रही बात भोजन की।वह भी एक संयोगमात्र है।दाने-दाने पर खाने वाले का नाम लिखा होता है।आज मेरे पिताजी का श्राद्ध था।

पितृ पक्ष : श्राद्ध कर्म का विज्ञान

प्रमोद भार्गव

जीवन का अंतिम संस्कार अंत्योष्टि संस्कार है। इसी के साथ जीवन का समापन हो जाता है। तत्पश्चात भी अपने वंश के सदस्य की स्मृति और पूर्वजन्म की सनातन हिंदू धर्म से जुड़ी मान्यताओं के चलते मृत्यु के बाद भी कुछ परंपराओं के निर्वहन की निरंतरता बनी रहती है। इसमें श्राद्ध क्रिया की निरंतरता प्रतिवर्ष रहती है। इस क्रिया को हम अपने दिवंगतों के प्रति आदर का भाव प्रकट करने का माध्यम भी कह सकते हैं। वैसे मृत्यु से लेकर श्राद्ध कर्म तक जो भी क्रियाएं अस्तित्व में हैं, उनके पीछे शरीर और प्रकृति का विज्ञान जुड़ा है, जिसे नकारा नहीं जा सकता है। श्राद्ध की मान्यता आत्मा के गमन से जुड़ी है। चूड़ामण्युनिषद् में कहा है कि ब्रह्म अर्थात ब्रह्मांड के अंश से ही प्रकाशमयी आत्मा की उत्पत्ति हुई है। इस आत्मा से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। इन्हीं पांच तत्वों के समन्वित रूप से मनुष्य व समस्त प्राणी जगत और ब्रह्मांड के सभी आयाम अस्तित्व में हैं। अतएव हिंदुओं के अंत्येष्टि संस्कार में मृत शरीर को अग्नि में समर्पित करके पांचों तत्वों में विलीन करने की परंपरा है।

आत्मा या शरीर के अंशों के इस विलय को संस्कृत में 'प्रैती' कहा है। इसे ही बोलचाल की भाषा में 'प्रेत' कहा जाने लगा। इसे ही धन के लालचियों ने भूत-प्रेत या अतीन्द्रीय शक्तियों की हानि पहुंचाने वाली मानसिक व्याधियों से जोड़ दिया। जबकि शरीर में आत्मा के साथ-साथ मन व प्राण भी होते हैं। आत्मा के अजर-अमर रहने वाले अस्तित्व को अब विज्ञान ने भी स्वीकार लिया है। मन और प्राण जब शरीर से मुक्त होते हैं, तब भी शरीर में इनका असर बना रहता है। इस कारण ये शरीर के चहूंओर भ्रमण करते रहते हैं। मन चंद्रमा का प्रतीक माना है। भारतीय दर्शन में इसीलिए स्थूल व सूक्ष्म शरीर की कल्पना कर विवेचना की गई है। पितृपक्ष की अवधि में ऐसी धारणा है कि मृतकों के सूक्ष्म अंश श्राद्ध की अवधि में परिजनों के इर्द-गिर्द मंडारते रहते हैं और श्राद्ध क्रिया से संतुष्ट होकर लौट जाते हैं। हालांकि संपूर्ण शरीर सत्रह सूक्ष्म इंद्रियों का आवास होता है। इनमें पांच कर्मेन्द्रियां, पांच ज्ञानेद्रियां, पांच प्राणेद्रियां, एक मन और एक बुद्धि हैं। यही इंद्रियां छह धातुओं त्वचा, रक्त, मांस, मेदा, मज्जा और अस्थि निर्मित स्थूल शरीर में प्रवेश कर उसे संपूर्ण बनाती हैं। अतएव स्थूल शरीर से जब ये सूक्ष्म इंद्रियां निकलती हैं, तब सूक्ष्म शरीर की रक्षा के लिए वायवीय अर्थात वायुचलित या काल्पनिक शरीर धारण कर लेती हैं। इसे ही प्रेत-संज्ञा दी गई है। यह वायु तत्व से प्रधान शरीर माया-मोह से मुक्त नहीं होने के कारण परिजनों के निकट भटकता रहता है। इसी प्रेतत्व से छुटकारे का उपाय दशगात्र एवं श्राद्ध आदि क्रियाएं हैं।

हिंदुओं में दाहक्रिया के समय कपाल क्रिया प्रचलन में है। गरुड़ पुराण के अनुसार शवदाह के समय मृतक की खोपड़ी को घी की आहुति देकर डंडे से प्रहार करके फोड़ा जाता है। चूंकि खोपड़ी का अस्थिरूपी कवच इतना मजबूत होता है कि सामान्य आग में वह आसानी से भस्मीभूत नहीं हो पाता है। इसलिए उसे घी डालकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाता है, जिससे यह भाग पूर्णरूप से पंचतत्वों में विलय हो जाए। इस क्रिया के प्रचलन से मान्यता जुड़ी है कि कपाल का भेदन हो जाने से प्राण तत्व पूरी तरह मुक्त हो जाते हैं और पुनर्जन्म की प्रक्रिया का हिस्सा बन जाते हैं। इस विषयक एक मान्यता यह भी है कि यदि मस्तिष्क का भाग अधजला रहेगा तो अगले जन्म में शरीर पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाएगा। मस्तिष्क में ब्रह्मा का निवास माना गया है, जो ब्रह्मरंध्र में प्राण के रूप में स्थिर रहता है। ऐसा माना जाता है कि शिशु जब गर्भ में जीवन ग्रहण करता है तो वह इसी रंध्र से होकर भ्रूण के शरीर में प्रवेश पाता है। यह बिंदु सिर के सबसे ऊपरी भाग में होता है। इसी भाग पर चोटी रखने का विधान है। यह भाग अत्यंत मुलायम होता है। चूंकि जीवन इस छिद्र से होकर शरीर में प्रवेश करता है, इसलिए कपाल क्रिया के माध्यम से इसे संपूर्ण रूप से बाहर निकालने का विधान किया जाता है, जिससे शरीर में पूर्व की कोई स्मृति शेष न रह जाए। इसे भौतिक शरीर का एंटीना भी कह सकते हैं।

इस ब्रह्मरंध्र का सबसे प्राचीन विज्ञान-सम्मत उल्लेख महाभारत में मिलता है। अश्वत्थामा जब पाण्डवों के वंशनास के लिए अभिमन्यु की गर्भवती पत्नी उत्तरा के गर्भ पर ब्रह्मास्त्र छोड़ देते हैं, तब उत्तरा की कोख से मृत शिशु जन्मता है। परंतु कृष्ण जब उस शिशु को हथेलियों में लेते हैं, तो उन्हें उसमें जीवन का अनुभव होता है। वे तुरंत शिशु के मुख में अपने मुख से वायु प्रवाहित करते हैं। इससे श्वांस नली में स्थित काकुली में ब्रह्मरंध्र अवरूद्ध हो गया था, वह खुल गया और शिशु के प्राणों में चेतना लौट आई। ब्रह्मरंध्र तीव्र ध्वनि तरंगों के आवेग और क्रोध से अवरुद्ध हो जाता है।

गंगा में अस्थियों के विसर्जन के पीछे भी विज्ञान सम्मत धारणा है। चूंकि अस्थियों में बड़ी मात्रा में फास्फोरस होता है, जो भूमि को उर्वरा बनाने का काम करता है। गंगा का प्रवाह आदिकाल से भूमि को उपजाऊ बनाए रखने के लिए उपयोगी रहा है। अतएव हड्डियों का गंगा में विसर्जन खाद का काम करता है। इससे तय होता है कि ऋषि-मुनियों ने अस्थियों में फास्फोरस उपलब्ध होने और उससे उपज अच्छी होने के महत्व को जान लिया था।

हिंदू धर्म में अंतिम संस्कार पुत्र से ही कराने की मान्यता है। दरअसल पुत्र चूंकि पिता के वीर्यांश से उत्पन्न है, अतएव वह पिता का प्रतिनिधित्व करने का वाहक भी है। ब्रह्मा ने बालक को पुत्र कहा है। मनुस्मृति में 'पुं' नामक नरक से 'त्र' त्राण दिलाने वाले प्राणी को 'पुत्र' कहा है। इसी नाते यह पिंडदान एवं श्राद्धदि कर्म का दायित्व पुत्र पर है। हालांकि पुत्र नहीं होने पर पुत्री से भी ये संस्कार कराए जा सकते हैं। चूंकि हिंदु दर्शन मानता है कि मृत्यु के साथ मनुष्य का पूर्णत: अंत नहीं होता है। मृत्यु द्वारा आत्मा शरीर से पृथक हो जाती है और वायुमंडल में विचरण करती है। हालांकि यही आत्मा मनुष्य के जीवित रहते हुए भी स्वप्न-अवस्था में शरीर से अलग होकर भ्रमण करती है, लेकिन शरीर से उसका अंतर्संबंध बना रहता है। रुग्णावस्था में भी आत्मा और शरीर का अलगाव बना रहता है। लेकिन मृत्यु के बाद आत्मा पूर्णत: पृथक हो जाती है। ऋग्वेद में कहा भी गया है कि 'जीवात्मा अमर है और प्रत्यक्षत: नाशवान है। इसे ही और विस्तार से श्रीमद्भगवद् गीता में उल्लेखित करते हुए कहा है, आत्मा किसी भी काल में न तो जन्मती है और न ही मरती है। जिस तरह से मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नए वस्त्र धारण कर लेता है, उसी अनुरूप जीवात्मा मृत शरीर त्यागकर नए शरीर में प्रवेश कर जाती है।

आत्मा की अमरता और पुनर्जन्म की धारणा को अब वैज्ञानिकों ने भी सिद्ध कर दिया है। ऑक्सफोर्ड विश्व-विद्यालय के गणित व भौतिकी के प्राध्यापक सर रोगर पेनरोज और एरीजोन विवि के भौतिक विज्ञानी डॉ स्टूअर्ट हामरॉफ ने दो दशक अध्यरत रहने के बाद स्वीकारा है कि 'मानव-मस्तिष्क एक जैविक कंप्युटर की भांति है। इस जैविक संगणक की पृष्ठभूमि में अभिकलन (प्रोग्रामिंग) आत्मा या चेतना है, जो दिमाग के भीतर उपलब्ध एक कणीय (क्वांटम) कंप्युटर के माध्यम में संचालित होती है। इससे तात्पर्य मस्तिष्क कोशिकाओं में स्थित उन सूक्ष्म नलिकाओं से है, जो प्रोटीन आधारित अणुओं से निर्मित हैं। बड़ी संख्या में ऊर्जा के सूक्ष्म स्रोत अणु मिलकर एक क्वांटम क्षेत्र तैयार करते हैं, जिसका वास्तविक रूप चेतना या आत्मा है। जब व्यक्ति दिमागी रूप से मृत्यु को प्राप्त होने लगता है, तब ये सूक्ष्म नलिकाएं क्वांटम क्षेत्र खोने लगती हैं। परिणामत: सूक्ष्म ऊर्जा कण मस्तिष्क की नलिकाओं से निकलकर ब्रह्मांड में चले जाते हैं। यानी आत्मा या चेतना की अमरता बनी रहती है।

इसी क्रम में प्रसिद्ध परामनोवैज्ञानिक डॉ रैना रूथ ने पदार्थगत रूपांतरण को ही पुनर्जन्म माना है। उनका कहना है कि पदार्थ और ऊर्जा दोनों ही परस्पर परिवर्तनशील हैं। ऊर्जा नष्ट नहीं होती, परंतु रूपांतरति व अदृश्य हो जाती है। इसीलिए डीएनए यानी महारसायन मृत्यु के बाद भी संस्कारों के रूप में अदृश्य अवस्था में उपस्थित रहता है और नए जन्म के रूप में पुन: अस्तित्व में आ जाता है। हमें जो विलक्षण प्रतिभाएं देखने में आती हैं, वे पुर्वजन्म के संचित ज्ञान का ही प्रतिफल होती हैं। अतएव कहा जा सकता है कि जीवात्मा वर्तमान जन्म के संचित संस्कारों को साथ लेकर ही अगला जन्म लेती है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि जींस (डीएनए) में पूर्वजन्म या पैतृक संस्कार मौजूद रहते हैं, इसी शेष से निर्मित नूतन सरंचना के चैतन्य अर्थात प्रकाशकीय भाग को प्राण कहते हैं। आधुनिक विज्ञान तो जीवन-मृत्यु के रहस्य को आज समझ पाया है, किंतु हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों साल पहले ही शरीर और आत्मा के इस विज्ञान को समझकर विभिन्न संस्कारों से जोड़ दिया था, जिससे रक्त संबंधों की अक्षुण्णता जन्म-जन्मांतर स्मृति पटल पर अंकित रहे।

सार-समाचार

कांग्रेस कमेटी ने विधानसभा व लोकसभा प्रभारी नियुक्त किए

चिरमिरी भारत भास्कर --छत्तीसगढ़ काँग्रेस कमेटी ने आगामी विधानसभा चुनाव,लोकसभा चुनाव के मद्देनजर काँग्रेस संगठन जिला प्रभारी,विधानसभा प्रभारी व लोकसभा प्रभारियों की नियुक्ति अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अनुमोदन से छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के शीर्ष नेतृत्व के अनुमोदन पर क्षेत्र के दो कांग्रेस पदाधिकारी को विधानसभा चुनाव प्रभारी की जिम्मेदारी मिली है छत्तीसगढ़ काँग्रेस महामंत्री प्रशासन मलकीत सिंह गैदु द्वारा हस्ताक्षरित सूची जिसमें चिरमिरी से छत्तीसगढ़ काँग्रेस में प्रदेश संयुक्त महासचिव श्रीमती बबीता सिंह को कोरबा जिला काँग्रेस संगठन प्रभारी नियुक्त किया गया हैं तथा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव एवं ब्लॉक कांग्रेस चिरमिरी के अध्यक्ष सुभाष कश्यप को भरतपुर विधानसभा प्रभारी नियुक्त किया गया है जो आगामी दिनों में संगठनात्मक बैठक लेकर पार्टी को जीताने के लिए कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार के साथ व प्रदेश काँग्रेस कमेटी को कार्यवाही से अवगत करायेगे, दोनों पदाधिकारीयो ने अपनी नियुक्ति के लिए शीर्ष नेतृत्व व समस्त काँग्रेस कार्यकर्ताओं का आभार जताते हुये कहा कि वे पूर्ण मनोयोग व निष्ठा से पार्टी द्वारा सौपे हर एक दायित्व का निर्वहन करेगे।

24 उपनिरीक्षकों को मिली नई पोस्टिंग

दुर्ग-रायपुर। पुलिस अधीक्षक कार्यालय से शहर में पदस्थ 24 उपनिरीक्षकों का तबादला आदेश जारी हुआ है। इसमें से अधिकांश एसआई रक्षित आरक्षी केन्द्र से विभिन्न थानों में पोस्टेड हुए हैं। वहीं कुछ एसआई एक थाने से दूसरे थाने में पहुंचे हैं। एसपी कार्यालय से जारी आदेशानुसार रक्षित केन्द्र दुर्ग से देवशरण सिंह को अंजोरा से प्रभारी लिटिया सेमरिया, खगेन्द्र पठोरे को पुलिस लाईन से दुर्ग, मन्नू लाल यादव को पुलिस लाईन से पुरानी भिलाई भेजा गया है। इसी तरह लाईन से अमित कुमार को खुर्सीपार, भीखम टंडन को डॉयल 112, शिव नारायण सिंह लिलाई पट्टी, नेमी कुमार साहू पुअ कार्यालय दुर्ग, महेंद्र प्रताप को छावनी, ईश्वर लाल सकार को धमधा, लक्ष्मण सिंह कोकिल को मोहन नगर, प्रमोद सिन्हा को सुपेला, कमल सिंह सेंगर को उतई, आशा वैष्ण को कुम्हारी, दीनदयाल वर्मा कुम्हारी, मननीष बाजपेयी सुपेला, तुलसीराम साहू को अण्डा, खेलन राम साहू पुलगांव, सौमित्री भोई को जामुल, अरूण कुमार देवता छावनी, घनश्याम नेताम वैशाली नगर, प्रीति जायसवाल को मोहन नगर, राधेलाल वर्मा नेवई, राजकुमार कामड़े महिला थाना तथा अशोक कुमार द्विवेदी को यातायात में पदस्थ किया गया है।

बीएसपी ने कार्बन कैप्चर और उसके उपयोग के लिए मेसर्स राम चरण प्राइवेट लिमिटेड के साथ किया समझौता

भिलाई। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र पर्यावरण संरक्षण के लिए एक समर्पित संस्थान है। भिलाई इस्पात संयंत्र स्वच्छ और सतत पर्यावरण की दिशा में योगदान देने और अपने व्यापार दर्शन और मूल्यों के अभिन्न अंग के रूप में अपने पर्यावरण संबंधी पहल में लगातार सुधार के लिए प्रतिबद्ध है। स्वच्छ और हरित पर्यावरण के भारत सरकार के अभियान को मजबूती प्रदान करने के लिए, बीएसपी ने जीवाश्म ईंधन के उपयोग के बिना स्टील के निर्माण की दिशा में ठोस कदम उठाते हुए ग्रीन स्टील का उत्पादन करने के लिए विभिन्न परियोजनाएं शुरू की हैं। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र और रिसर्च एंड डेवलपमेंट सेंटर ऑफ आयरन एंड स्टील ने बुधवार 27 सितंबर 2023 को चेन्नई स्थित मेसर्स राम चरण कंपनी प्राइवेट लिमिटेड के साथ नॉन-डिस्क्लोजर एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किया है। विभिन्न इस्पात संयंत्रों में उत्सर्जन को मूल्य वर्धित उत्पादों में परिवर्तित करने की अवधारणा पर कार्य करने की दिषा में यह समझौता किया गया है। भिलाई इस्पात संयंत्र के निदेशक प्रभारी श्री अनिर्बान दासगुप्ता, कार्यपालक निदेषक (वर्क्स) श्री अंजनी कुमार, आरडीसीआईएस, सेल के कार्यपालक निदेशक प्रभारी श्री निर्विक बनर्जी और आरडीसीआईएस के कार्यपालक निदेशक श्री संदीप कुमार कर के मार्गदर्शन में एग्रीमेंट हस्ताक्षरित किया गया। सेल-बीएसपी की ओर से मुख्य महाप्रबंधक (ईएमडी) श्री राकेश जोशी और आरडीसीआईएस के मुख्य महाप्रबंधक (सीसी एंड ईई) श्री पार्थ बनर्जी ने समझौते पर हस्ताक्षर किया तथा प्रबंध निदेशक श्री कौशिक पलीचा ने मेसर्स राम चरण कंपनी प्राइवेट लिमिटेड की ओर से समझौते पर हस्ताक्षर किया। मेसर्स राम चरण द्वारा प्रेषित समाधानों का उपयोग करते हुए सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र का उद्देश्य ग्रीन स्टील का उत्पादन करते हुए कार्बन तटस्थता की ओर अग्रसर होना है। वर्तमान में राम चरण अपने पेटेंट मिनी-रिएक्टर की स्थापना की प्रक्रिया में है, जिसके द्वारा उत्सर्जित कार्बन डाइ ऑक्साइड की किसी भी सांद्रता को इथेनॉल, मेथनॉल, एसीटेट, फॉर्मेल्डिहाइड आदि जैसे मूल्य वर्धित उत्पादों में परिवर्तित किया जा सकेगा।

विधानसभा चुनाव संबंध में जिला निर्वाचन अधिकारी ने राजनैतिक दलों, अधिकारी कर्मचारियों के ली बैठक

राजीव वर्मा

एम,सी बी-भारत भास्कर- विधानसभा निर्वाचन को स्वतंत्र एवं निष्पक्ष ढंग से सम्पन्न कराने हेतु कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी नरेन्द्र कुमार दुग्गा ने राजनैतिक दलों के साथ बैठक की उन्होंने आदर्श आचार संहिता के संबंध में दोनों विधानसभा क्षेत्र के रिटर्निंग ऑफिसर, समस्त तहसीलदार, नायब तहसीलदार, जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, नगरीय निकाय के मुख्य नगर पालिका अधिकारी के मुख्य नगर पालिका अधिकारी, मैदानी स्तर के कर्मचारी एवं राजस्व निरीक्षक की बैठक ली

उन्होंने आदर्श आचार संहिता लागू होते ही 24 घंटे, 48 घंटे, 72 घंटे के भीतर की जाने वाली संपत्ति विरूपण हटाने की कार्यवाही के बारे में आवश्यक दिशा निर्देश दिए ,जिसके तहत शासकीय सम्पत्ति शासकीय कार्यालय से राजनैतिक संबद्धता के सभी विज्ञापन, बैनर पोस्टर, फ्लैक्सी, दीवार लेखन राजनैतिक व्यक्तियों के फोटो आदि 24 घण्टे के भीतर हटाने की कार्यवाही की जायेगी। इसी प्रकार सार्वजनिक स्थल जैसे-रेल्वे स्टेशन, बस स्टॉप, सडक, पुल के किनारे सरकारी खर्च पर लगाए गये होर्डिंग, राजनैतिक विज्ञापन, राजनीति में सक्रिय व्यक्तियों के चित्र, संदेश वाले विज्ञापन, बिजली के खंभों एवं वृक्षों पर लगाए गये बैनर, पोस्टरों को 48 घंटे के भीतर हटाया जायेगा। निजी घरों में किये गये दीवार लेखन, राजनैतिक विज्ञापन को 72 घंटे के भीतर हटाने की कार्यवाही की जायेगी।

जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा समस्त अधिकारियों को अभी से ऐसे स्थानों का चिन्हित कर योजना बनाकर टीम का गठन करने के निर्देश दिये गये जिससे समय सीमा के भीतर विरूपण हटाने की कार्यवाही की जा सके। इस कार्य के लिए मैदानी अधिकारी प्रत्येक गांव, प्रत्येक वार्ड का दौरा कर पंजी संधारण करके रखें कि किन-किन स्थानों से सम्पत्ति विरूपण की कार्यवाही की जानी है। उन्होंने सभी अधिकारियों को यह निर्देश दिये की 72 घंटे के बाद जिले के सभी स्थानों से इस प्रकार के सम्पत्ति विरूपण दिखाई नहीं देना चाहिए।

आदर्श आचार संहिता लागू होते ही केन्द्र अथवा राज्य के सरकारी उपक्रम, स्थानीय निकाय में राजनैतिक पदाधिकारियों को दी गयी शासकीय वाहन वापस लिये जायेंगे। शासकीय वाहन का दुरुपयोग नहीं होगा। सभी अधिकारी अपने क्षेत्र में चल रही निर्माण कार्य की सूची प्राप्त करेगें। कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं होगा। किसी भी प्रकार का शिलान्यास, भूमिपूजन अथवा टेन्डर जारी नहीं होगी। सरकारी खर्च पर सरकार की उपलब्धि संबंधी विज्ञापन जारी नहीं होगें। ऐसे विज्ञापन के प्रसारण पर तत्काल रोक रहेगी। आदर्श आचार संहिता लगते ही निर्वाचन व्यय की निगरानी करने वाली समितिया तत्काल सक्रिय हो जाएगी और पूरे चुनाव के दौरान जिला स्तर पर 24 ङ्ग 7 नियंत्रण कक्ष तत्काल सक्रिय हो जाएगा। शिकायत प्रकोष्ठ तत्काल कार्य करना प्रारम्भ कर देंगी। आदर्श आचार संहिता लागू होते ही इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में कोई भी विज्ञापन बिना पूर्व प्रमाणन के प्रसारित नहीं होंगे। सभी अधिकारियों को निर्वाचन अवधि में प्रतिदिन सम्पत्ति विरूपण रोकथाम की जानकारी समय 3 बजे तक अनिवार्य रूप से जिला निर्वाचन कार्यालय को देने के निर्देश दिये गये।पुलिस अधीक्षक सिद्वार्थ तिवारी ने राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को अवगत कराते हुए कहा कि दोपहिया तीनपहिया, चारपहिया व भारी वाहनों के उपयोग, वाहनों के माध्यम से प्रचार-प्रसार करने, आमसभा, रैली, रोड शो करने के लिए अनुमति लिया जाना आवश्यक होगा। रोड शो के दौरान किसी भी तरह की अस्त्र-शस्त्र के उपयोग की अनुमति नहीं होगी और न ही पुतला दहन व पटाखे फोड़ने की अनुमति होगी। कोलाहल अधिनियम के तहत रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक ध्वनि विस्तारक यंत्र का प्रयोग प्रतिबंधित रहेगा।

इस दौरान सभाकक्ष में भाजपा से अनिल केशरवानी, कांग्रेस के राजेश शर्मा, जनता कांग्रेस से आदित्य डेविड तथा आम आदमी पार्टी से विकास पाण्डेय, उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अनिल कुमार सिदार, संयुक्त कलेक्टर सी.एस. पैकरा, एसडीएम मूलचन्द चोपड़ा, श्रीमती अभिलाषा पैकरा सहित निर्वाचन कार्यालय के कर्मचारी उपस्थित रहे।

उत्कल समाज चिरमिरी ने विधायक विनय जायसवाल का आत्मीय सम्मान कर बताया.. जन नायक...

राजीव वर्मा

चिरमिरी भारत भास्कर--- उत्कल समाज चिरमिरी द्वारा मनेंद्रगढ़ विधायक विनय जायसवाल का शहर के हृदय स्थल हल्दीबाड़ी यातायात चौक में आत्मीय सम्मान करते हुए उन्हें ईश्वर का दूसरा रूप बताया और कहा की जो व्यक्ति पेट की भूख को मिटा दे वह कोई समान्य व्यक्ति नहीं हो सकता. विधायक के द्वारा हम सभी के परिवार वालो की पेट की भूख मिटाया जिसको हम क्या हमारे पूर्वज भी नहीं भूल सकते.

अपने जीवन काल में कोयले की खान से कोयले को निकाल कर हमने देश को विकास की नई उचाईयों तक ले जाने में अपना कदम बढ़ाने का कार्य किया पर स्थानीय दलालो के द्वारा हमारे नामो में केवल मात्राओ की त्रुटि को आधार बना कर हमे हमारी नोकरी से हटवा दिया हमारे परिवार को सड़क पर लाने का काम किया बीते पांच वर्षो में हमने अपने परिवार के साथ कैसे अपना जीवन का गुजारा किया यह या तो हम जानते है या यह हमारे विधायक विनय जायसवाल जानते है । यह सम्मान तो केवल दिख रहा है पर हम और हमारे परिवार के दिलों वह स्थान विधायक को मिला है जो हमारे मुख से बोला नहीं जा सकता यह कर्ज हम कभी चुना नहीं सकते है । बता दे कि एस ई,सी एल चिरमिरी क्षेत्र में निवास रथ मात्रात्मक त्रुटि के कारण 32 श्रमिकों के बर्खास्तगी के बाद विधायक डॉ विनय जायसवाल के द्वारा लगातार एस सी ई एल, प्रबंधन के खिलाफ आंदोलन और पत्राचार के बाद भविष्य निधि (पीएफ)

एवं पेंशन राशि मिलने पर आज सभी श्रमिक भाईयो और उत्कल समाज के प्रबुद्ध जनों ने सम्मान समारोह का आयोजन स्कुल ग्राउंड हल्दीबाड़ी में आयोजित कर मनेंद्रगढ़ विधायक डॉ विनय जायसवाल को सम्मानित किया, सम्मान कार्यक्रम में उपस्थिति विधायक डॉ. विनय जायसवाल ने कहा कि आप लोगो ने मेरा मान बढ़ाया उसका सदैव मैं ऋणी रहूंगा आप सभी का विशेष स्नेह, अपनत्व और आशीर्वाद ही मेरी ताकत है मुझे आज खुशी है की मैंने आप सभी के साथ मिलकर क्षेत्रवासियों के प्यार और आशीर्वाद से एक बड़ी जीत हासिल की है मैं हर पल,हर वक्त,हर निर्णय और हर परिस्थिति में क्षेत्र हित की लड़ाई सदैव लड़ता रहूंगा और गरीब जनता की लड़ाई लड़ता रहूंगा । आने वाली सरकार कांग्रेस की होगी चिरमिरी में विकास अभूतपुर रहेगा चिरमिरी की जनता का जो प्यार मुझे मिला उसे मैं सदैव नहीं भूल सकता हमेशा आप लोगों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर यूं ही चलता रहूंगा। बहरहाल इस सम्मान आयोजन में सबसे महत्वपूर्ण बात यह देखने को मिली की उत्कल समाज के पुरुषो के साथ उनके घर की महिलाएं और छोटे छोटे बच्चे भी विधायक को सम्मान देने की होड़ लगी रही हर कोई विधायक से एक बार मिलना उनसे बात करना चाह रहा था जो पुरे कार्यक्रम में एक भावुक पल था ।

छेत्र में ईद मिलाद-उन-नबी त्योहार धूमधाम से मनाया गया

चिरमिरी भारत भास्कर- क्षेत्र मे ईद मिलाद-उन-नबी त्योहार धूम धम से मनाया गया 7 इस्लाम धर्म को मानने वालों के लिए यह पर्व महत्वपुर्ण माना जाता है । मान्यता है. कि इसी दिन अल्लाह के दूत कहे जाने वाले पैगंबर मुहम्मद का जन्म हुआ था. इस दिन इस्लाम को मानने वाले, तमाम लोग खुशियों के साथ इस खास उत्सव का जश्न मनाते हैं...इस अवसर पर इस्लाम धर्म को मानने वाले मस्जिद मे बडी संख्याँ मे जामा होकर बाजे और ढोल नगाडे के साथ रैली निकल कर नगर भ्रमन किया ।

रैली मे सामिल लोगो का जगह जगह स्वागत किया गया और मिठाईयॉ खिलाई गई और शरबत पीलाया गया ।

ईद-ए-मिलाद-उन-नबी क्यों मनाई जाती है-- दरअसल इस्लाम में पैगंबर मुहम्मब को मार्गदर्शक माना जाता है. इसी वजह से उनके यौम ए पैदाइश के दिन को एक जश्न के तौर पर मनाया जाता है. इसे ईद-ए-मिलाद-उन-नबी कहा जाता है, जिसमें 'मिलाद' का अर्थ है पैगंबर मुहम्मद सहाब की जन्मतिथि, मिलाद का हिंदी अर्थ 'जन्म' होता है. लिहाजा इस्लाम का ये खास दिन 'पैगंबर हजरत मुहम्मद' के जन्म से जुड़ा है. बता दें कि इसे मनाने की शुरुआत, कई दशकों पहले हुई, जब इस्लाम में मानने वाले पैगंबर मुहम्मद के सम्मान में उनका जिक्र किया

करते. ये दौर इस्लाम के शुरुआती दिनों का था.

क्या है इस दिन का महत्व- इस्लामी दुनिया के निर्माण और मार्गदर्शन में पैगंबर मुहम्मद का बहुत बड़ा योगदान था, जिन्हें अल्लाह द्वारा लोगों को जाहिलियत के अंधेरे से बाहर निकालने के लिए भेजा गया था. ईद-ए-मिलाद-उन-नबी या ईद मिलादुन्नबी का ये दिन, जो पैगंबर मुहम्मद की यौम ए पैदाइश का दिन है, इस्लाम में मानने वालों और मुसलमानों के लिए बहुत महत्व रखता है. इस दिन को लोग एक जश्न और उत्सव के तौरपर भरपूर खुशियों के साथ मनाते हैं.

फर्जी दस्तावेज धारकों का चयन सूची में नाम,पीड़ित अभ्यार्थियों ने कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

क्षेत्रीय पशु चिकित्सा अधिकारी संविदा नियुक्ति पर किया गया जमकर फर्जीवाड़ा

नन्दू यादव

सूरजपुर भारत भास्कर - छत्तीसगढ़ राज्य में जहां एकतरफ भ्रष्टाचार का मामला गरमाया हुआ है. वहीं दूसरी तरफ सूरजपुर जिले में संविदा भर्ती भ्रष्टाचार का भेंट चढ़ गया है. सूरजपुर जिले में डीएमएफ योजना के तहत पशु चिकित्सा सुविधाओं को सुदृढ़ करने हेतु 27 पद क्षेत्रीय पशु चिकित्सा अधिकारी का संविदा नियुक्ति हेतु विज्ञापन जारी किया गया था. जिसमें योग्य पीड़ित अभ्यार्थियों ने चयन समिति के ऊपर अनियमितता व भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए सूरजपुर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा है.

ज्ञापन में पीड़ित अभ्यार्थियों ने कहा है कि छत्तीसगढ़ के जिला सूरजपुर में प्रशासन द्वारा डी. एम. एफ योजना के तहत सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्राधिकारी की नियुक्ति की जा रही है संविदा भर्ती में अपने चहेते अभ्यर्थियों की नियुक्ति फर्जी तरीके से की जा रही है.

पीड़ित अभ्यार्थियों का कहना है कि अभ्यर्थियों द्वारा फर्जी दस्तावेज के सहारे नौकरी प्राप्त की जा रही है। विभाग के द्वारा चयन सूची जारी किया गया है जिसमें कुछ अभ्यार्थियों का फर्जी दस्तावेज होते हुए भी

चयन सूची में उनका नाम रखा गया है. जबकि यह चयन सूची चयन समिति के द्वारा दस्तावेज परिक्षण कर , साक्षत्कार व इंटरव्यू के बाद बहुत बारीकी से तैयार किया गया है. पीड़ित अभ्यार्थियों का कहना है कि इतना सब बारीकी जांच के बाद इतना बड़ा गलती क्यों किया किया गया है. मतलब साफहै कि चयन समिति के द्वारा भारी अनियमितता बरती गई है. शायद भ्रष्टाचार के लिए साक्षात्कार व इंटरव्यू रखा गया था.

जिनका नंबर अधिक उन्हें इंटरव्यू में दिया गया कम नंबर- जबकि इससे पहले पशु स्वास्थ्य विभाग में संविदा नियुक्ति हेतु कभी नहीं इंटरव्यू रखा गया था और यहां इंटरव्यू भी हुआ तो उसमें जिन अभ्यर्थियों का 12वीं व डिप्लोमा में ज्यादा नंबर है उन्हें इंटरव्यू में कम नंबर दिया गया है. जबकि पीड़ित अभ्यार्थियों का कहना है कि उन्होंने सभी सवालों का जवाब अच्छी तरह से दिया है तो कम नंबर कैसे दिया गया? ऐसे में योग्य उम्मीदवारों का चयन नहीं हो पा रहा है और योग्य उम्मीदवार चयनित होने से वंचित हो जा रहे हैं और उनका भविष्य अंधकारमय हो जा रहा है। उक्त नियुक्ति को प्रशासनिक स्तर पर कमेटी चयन कर किया जाना उचित होगा तथा जिन भी अभ्यर्थियों

के द्वारा फर्जी दस्तावेजों का सहारा लिया जा रह है उनके विरूद्ध कठोर से कठोर कार्यवाही किया जाए वहीं तत्काल पद को निरस्त किया जाए और योग्य अभ्यर्थियों का चयन किया जाए. अन्यथा सभी अभ्यर्थी उग्र आन्दोलन हेतु बाध्य होंगे. जिसका जिम्मेदार शासन व जिला प्रशासन होगा. ज्ञापन सौंपने में आशीष कुमार, ललीता पैकरा, मुस्कान कुमारी कसेरा, दीपा कुशवाहा, पूर्णिमा सिंह, धनेश्वर , चन्द्रजीत सिंह व भारी संख्या में युवा उपस्थित रहे.

छत्तीसगढ़ शिक्षक संघ जांजगीर चांपा ने किया सेवानिवृत्त शिक्षकों एवं पूर्व पदाधिकारीयों का सम्मान

जांजगीर चांपा। छत्तीसगढ़ शिक्षक संघ जिला इकाई जांजगीर चांपा के तत्वाधान में दिनांक 24 सितंबर 2023 को सरस्वती शिशु मंदिर चांपा के सभा हाल में सेवानिवृत शिक्षक शिक्षिकाओं एवं संगठन के पूर्व पदाधिकारीयों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित किया गया।जिसमें मुख्य अतिथि प्रदीप शर्मा प्रांतीय प्रमुख संगठन मंत्री छत्तीसगढ़ शिक्षक संघ अध्यक्षता एम डी दीवान विकासखंड शिक्षा अधिकारी बम्हनीडीह विशिष्ट अतिथि हरिराम जायसवाल ए पी सी समग्र शिक्षा जाँजगीर चांपा अशोक कुमार गुप्ता संभागीय अध्यक्ष छत्तीसगढ़ शिक्षक संघ मनोज कुमार तिवारी पूर्व प्रांतीय संयोजक छत्तीसगढ़ शिक्षक संघ जयंती दुबे पूर्व प्रांतीय उपाध्यक्ष छत्तीसगढ़ शिक्षक संघ सहित मंचस्थ अतिथियों की गरिमामय उपस्थिति में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन जिलाध्यक्ष धन्य कुमार पांडेय के साथ विजय थवाईत ने किया।मंचस्थ अतिथियों ने सम्मान समारोह का शुभारंभ आराध्य देवी देवताओं के तैल चित्र पर पूजा अर्चना कर किया।आचार्य सहित छात्र-छात्राओं ने सरस्वती वंदना का गायन प्रस्तुत किया।संगठन के पदाधिकारीयों ने मंचस्थ अतिथियों का पुष्प माला से आत्मीय स्वागत अभिनंदन किया तत्पश्चात पुनः छात्र-छात्राओं ने अतिथियों के सम्मान में सुमधुर स्वागत गीत प्रस्तुत किया तथा प्रदीप श्रीवास ने सेवानिवृत्त शिक्षकों सहित मंचस्थ अतिथियों का तिलक लगाकर अभिनंदन किया।स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए जिलाध्यक्ष धन्य कुमार पांडेय ने कार्यक्रम की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए संगठन के प्रति अपनी महति भूमिका का निर्वहन करने के लिए सेवानिवृत्त शिक्षकों को धन्यवाद ज्ञापित किया साथ ही आजीवन संगठन से जुड़े रहने का आह्वान भी किया। समारोह को हरिराम जायसवाल एम डी दीवान,अशोक गुप्ता,मनोज तिवारी,जयंती दुबे,शंकर लाल साव प्राचार्य एफएल साहू बिर्रा सहित सेवा निवृत्त प्रोफेसर अश्विनी केशरवानी पद्माकर तिवारी प्राचार्य आर के राठौर प्राचार्य राजेंद्र सिंह नीरा शर्मा परमेश्वर स्वर्णकार तथा अंत में मुख्य अतिथि प्रदीप कुमार शर्मा ने संबोधित किया।मंचस्थ अतिथियों ने अपने उद्बोधन में सेवानिवृत शिक्षक शिक्षिकाओं के स्वस्थ सुखद उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए सतत अपने ज्ञान का अधिक से अधिक सदुपयोग समाज एवं राष्ट्र के लिए करते हुए संगठन के प्रति लगाव बनाए रखने का विश्वास व्यक्त किया।मंचस्थ अतिथियों के करकमलों से सेवानिवृत शिक्षक शिक्षिकाओं,पूर्व पदाधिकारीयों का शॉल श्रीफल एवं कलम से आत्मीय सम्मान किया गया। संगठन के पदाधिकारीयों द्वारा शॉल श्रीफल एवं कलम से मंचस्थ अतिथियों का भी आत्मीय अभिनंदन किया गया।सम्मान कार्यक्रम में 70 से अधिक सेवानिवृत शिक्षक शिक्षिकाओं ने आमंत्रण स्वीकार कर उपस्थिति दर्ज कराते हुए कार्यक्रम का मान बढ़ाया।आभार व्यक्त अभिषेक काल्विन ने किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में संगठन के साथियों संतोष कुमार साव बलौदा तोषण तिवारी,विनोद पांडेय नवागढ़ मन्नू लाल कर्ष अकलतरा नारायण प्रसाद साहू,डां उमेश दुबे,उमाशंकर खूंटे, परमेश्वर स्वर्णकार बम्हनीडीह सहित जिला इकाई से राजेंद्र जायसवाल, एस पी सरदार, नारायण प्रसाद सूर्यवंशी, भुवनेश्वर प्रसाद देवांगन, अभिषेक कॉल्विन, प्रदीप श्रीवास, नाज़नीन खान, राधा चौहान, मर्सी सक्सेना, नीरा प्रधान, अमिता सावरकर पंचराम तंबोली, कुमार सिंह राज चक्रधर राठौर, लखन कश्यप, लोमस श्रीवास तथा संगठन के कर्मठ जुझारू साथियों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष योगदान दिया।

बैंकों की सुरक्षा परखने पुलिस चला रही विशेष अभियान

- बैंकों का किया जा रहा सुरक्षा आडिट
- घरघोड़ा के एसबीआई व सेंट्रल बैंक तथा खरसिया के पंजाब नेशनल बैंक पहुंचे थाना प्रभारी
- थाना चक्रधरनगर के स्टाफ एक साथ पहुंचे क्षेत्र के सभी 06 बैंकों पर सायरन बजाकर किये जांच

रायगढ़। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सदानंद कुमार के दिशा निर्देशन पर बैंकों के सुरक्षा आडिट का अभियान चलाया जा रहा है। थाना प्रभारीगण उनके थाना क्षेत्र अंतर्गत संचालित बैंकों की सुरक्षा व्यवस्था जिसमें बैंक में लगे सुरक्षा अलार्म सिस्टम, सीसीटीवी, सुरक्षागार्ड की जांच, बैंक परिसर में संदिग्ध व्यक्तियों की चेकिंग, बैंक के ग्राहक को वित्तीय फ्रॉड की जानकारी देना शामिल है। इसी क्रम में थाना प्रभारी घरघोड़ा निरीक्षक शरद चंद्रा ने एसबीआई घरघोडा और सेंट्रल बैंक घरघोड़ा तथा थाना प्रभारी खरसिया निरीक्षक सौरभ द्विवेदी द्वारा पंजाब नेशनल बैंक खरसिया का बारीकी से निरीक्षण किया गया। थाना प्रभारी खरसिया निरीक्षक सौरभ द्विवेदी द्वारा पंजाब नेशनल बैंक मैनेजर सुमित बेरिया की उपस्थिति में बैंक का सुरक्षा ऑडिट किया गया उन्होंने बैंक के सुरक्षा गार्ड, पैनिक अलार्म सिस्टम, सीसीटीवी कैमरा की तसल्ली पूर्वक जांच किया तथा पाई गई खामियों की टीप दर्ज कर बैंक मैनेजर को शीघ्र व्यवस्था दुरूस्त करने के निर्देश दिये। वहीं थाना प्रभारी घरघोड़ा निरीक्षक शरद चन्द्रा द्वारा एसबीआई घरघोडा और सेंट्रल बैंक घरघोड़ा के प्रबंधकों को सुरक्षा संबंधी निर्देश देकर बैंक के बाहर अनावश्यक मंडरा रहे युवकों को कड़ी समझाइश देकर बाहर जाने का रास्ता दिखाया गया। इसी कड़ी में थाना प्रभारी चक्रधरनगर निरीक्षक प्रशांत राव अहेर के नेतृत्व में चक्रधरनगर स्टाफ थाना क्षेत्र के अंतर्गत संचालित 6 बैंकों में अकस्मात पहुँचकर सुरक्षा जांच किया गया। पुलिसकर्मी बैंकों के शाखा प्रबंधकों व स्टाफ के साथ सुरक्षा पर चर्चा कर बैंक के अंदर, बाहर और सड़क तक फोकस करने सीसीटीव्ही कैमरा लगवाने और सीसीटीव्ही फुटेज सहेज कर रखने कहा गया। पुलिसकर्मियों ने बैंक के सायरन और बैंकों में आगजनी से बचाव के उपकरणों का भी जायजा लिया गया।

जीएससी स्कूल, जैजैपुर के रासेयो इकाई के स्वयं सेवकों ने मनाया रासेयो स्थापना दिवस एवं सम्मान समारोह कार्यक्रम

जैजैपुर। जी.एस.सी. मॉडल कान्वेंट हायर सेकण्डरी स्कूल, जैजैपुर" के रासेयो इकाई के स्वयं सेवकों के द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना स्थापना दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम मां सरस्वती, भारत माता के छायाचित्र पर द्विप प्रज्वलित कर श्रीफल तोड़ के कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। संचालक जी.एस. चन्द्रा जी ने रासेयो के उद्देश्य पर विस्तार से प्रकाश डाला और विद्यालय के छात्र/छात्राओं को अधिक से अधिक संख्या में रासेयो से जुड़ने की बात कही। प्राचार्य (हिन्दी माध्यम) विजय कुमार यादव ने आदर्श पुरुष स्वामी विवेकानंद के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। रासेयो कार्यक्रम अधिकारी कुमारी रीमा रानी पलांगे जी ने के आदर्श वाक्य के बारे में जानकारी दिया। उद्बोधन के पश्चात् रासेयो, प्रमाण- पत्र परीक्षा में पात्र स्वयं सेवकों को संचालक जी के कर कमलों से प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में सहा. कार्यक्रम अधिकारी सुदाम बेहेरा, कैलाश दास, मनोहर बेहेरा, राधेश्याम कुर्रे, भारती चन्द्रा एवं रासेयो के स्वयं सेवक शैलेश कुमार चन्द्रा, मुकेश चन्द्रा, कुश कुमार चन्द्रा, संदीप डहरिया, अनिल कुमार चन्द्रा, राहुल यादव, धनलता चन्द्रा, छाया साहू, स्वाति चन्द्रा, देवेंद्र, कमलेश, भावेश, आशीष, दुर्गेश चन्द्रा, कपिल साहू, लक्ष्मी नारायण, विनोद, ईश्वर, काव्यांश, गोवर्धन, विवेकानंद, हर्ष कुमार चौहान, सूरज चन्द्रा, मनीष, राजू, प्रीतम, देवेंद्र चौबे, प्रणव, लक्की कुमार, नागेश्वर, महेश, विवेक चन्द्रा, प्राची चन्द्रा, दीप्ति जायसवाल, आरती, आर्या, अंजली सिदार, निधि, दिव्या, अंजली कुर्रे, चांदनी, तान्या, कंचन, अंजली चन्द्रा, साक्षी चन्द्रा, प्रेमलता, नैना, कामिनी, नंदनी, पूजा, मालवी, मुस्कान, आशा, आदि स्वयं सेवक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

मृत व्यक्ति के नाम पर एक लाख पैंतीस हजार आहरण

मामला सेवा सहकारी समिति सिवनी पंजीयन क्रमांक 272 का

चांपा। सेवा सहकारी समिति सिवनी पंजीयन क्रमांक 272 में मृत व्यक्ति के नाम पर केसीसी जारी कर रुपए आहरण करने का मामला प्रकाश में आया है इस पूरे मामले की शिकायत उप पंजीयक जांजगीर में किया गया दोषी संस्था प्रबंधक सहित जिम्मेदारों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की मांग की गई है। इस मामले में शिकायत के बाद हड़कंप मचा हुआ है दिलचस्प बात यह है कि मृत व्यक्ति के नाम आखिर 1 लाख 35 हजार का केसीसी जारी कर आहरण करने की बात इतने दिनों तक क्यों छिपाकर रखी गई बहरहाल जांच में दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा शिकायत के मुताबिक सागर सिंह पिता धावन सिंह की मृत्यु वर्ष 2022-23 में हो गई है। इसके बाद भी केसीसी वसूली लिस्ट नंबर 26 में मृत व्यक्ति सागर सिंह का नाम दर्ज है। इससे जाहिर होता है कि किसी ने मृत व्यक्ति के नाम 1 लाख 35 हजार रुपए केसीसी लोन निकाला और रुपए हजम करने के बाद उस राशि को जमा नहीं किया गया, जिसके चलते अब भी मृत व्यक्ति सागर सिंह का नाम अब भी बैंक के वसूली लिस्ट में शामिल है। शिकायत में कहा गया है कि केंद्रीय बैंक शाखा चांपा में खाता क्रमांक 606027038255 केसीसी की राशि 1 लाख 35 हजार रुपए डाला गया था। बाद में उस खाते से उक्त राशि भी आहरण हो गई। खास बात यह है कि सागर सिंह की मृत्यु दिनांक 18 सितंबर 2021 है इससे कहीं न कहीं सेवा सहकारी समिति सिवनी चांपा के कर्मचारियों की भूमिका संदिग्ध है। इस पूरे मामले में दोषियों के खिलाफकड़ी कार्रवाई की मांग की गई है।

57 वे रामलीला समारोह की तैयारिया प्रारंभ

- कलाकार रिहर्सल कर अपने पात्र को अलग पहचान देने में जुटे , 17 अक्तूबर से 23 अक्तूबर तक होगा ऐतिहासिक रामलीला का मंचन

रायगढ़। ऐतिहासिक रामलीला समारोह की तैयारिया युद्ध स्तर पर प्रारंभ हो गई है। श्री गणेश चतुर्थी के दिन ही रामलीला के मंच, रावण दहन स्थल की पूजा अर्चना की जाती है इसके बाद रामलीला की तैयारिया प्रारंभ कर दी जाती है। रामलीला आयोजन समिति के संरक्षक दीपक पांडेय ने बताया कि इस डिजिटल युग में भी प्रभु श्री राम जी की लीला को देखने भारी संख्या में श्रद्धालु आते हु ये बहुत बड़ी बात है। हमारे कलाकार बिना पारिश्रमिक लिए पूरे दस दिन ही नही गणेश चतुर्थी से निस्वार्थ जुड़े रहते हु ये श्री राम प्रभु का आशिर्वाद ही है। इस मर्तबा रामलीला 17 अक्तूबर से 24 अक्टूबर का रहेगा। दशहरा के दिवस विशालकाय रावण के पुतले क्या दहन किया जाएगा।

रामलीला की तैयारिया प्रारंभ हो गई है कलाकार रात्रि में रिहर्सल को आ रहे है। वही मां रामेश्वरी मंदिर में नवरात्र का त्योहार पूरे श्रद्धा भक्ति से मनाया जाएगा। दीपक पांडेय ने आगे बताया कि रामलीला के मंचन के दौरान शहर की प्रतिभाशाली बच्चियों का नृत्य का कार्यक्रम रखा जायेगा। पूरे मैदान को दुल्हन की तरह सजाया जाएगा।

पालीघाट में धारदार कत्ता से दहशत फैलाने की कोशिश, तीन युवक पुलिस के हत्थे चढ़े

रायगढ़। तमनार हमीरपुर मार्ग पर पालीघाट बंजारी मंदिर के पास धारदार कत्ता से लोगों को भयभीत करके लूटपाट करने के इरादे से मारपीट करने वाले तीन युवकों को तमनार पुलिस ने आर्म्स एक्ट के तहत गिरफ्तार कर लिया है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सदानंद कुमार के निर्देशन पर आसन्न विधानसभा चुनाव शांतिपूर्ण रूप से सम्पन्न कराने की दिशा में थाना प्रभारीगण अपने-अपने क्षेत्र में असामाजिक तत्वों पर लगाम लगाने के लिए उनके गतिविधियों की सूचनाएं देने मुखबिर को सक्रिय कर सूचनाओं पर विधि अनुरूप किया जा रहा है। इसी क्रम में कल थाना प्रभारी तमनार निरीक्षक आर्शीवाद राहटगांवकर को बंजारी मंदिर पालीघाट आम रोड़ पर युवकों को लोहे का धारदार कत्ता हथियार दिखाकर लोगों को डराने धमकाने की सूचना प्राप्त हुआ। तत्काल थाना प्रभारी ने पालीघाट क्षेत्र में लाइन आर्डन ड्यूटी पर रवाना हुये थाने के स्टाफ को जाकर तस्दीक कर कार्रवाई करने निर्देशित किये। जहां स्टाफ द्वारा बंजारी मंदिर पालीघाट रोड़ किनारे घेराबंदी कर सुरक्षापूर्वक तीन युवक अशोक यादव ऊर्फचिंटु पिता स्व प्यारीलाल यादव उम्र 27 वर्ष सा. मालीडीपा बोईरदादर चक्रधर नगर थाना चक्रधर नगर रायगढ़, अजय डनसेना पिता धनेश्वर डनसेना उम्र 23 साल सा0 हमीरपुर थाना तमनार जिला रायगढ़, अजय डनसेना पिता धनेश्वर डनसेना उम्र 23 साल सा0 हमीरपुर थाना तमनार जिला रायगढ़ को लोहे के धारदार कत्ता के साथ हिरासत में लिया गया। आरोपियों के कृत्य पर थाना तमनार में पृथक-पृथक धारा 25, 27 आर्म्स एक्ट की कार्यवाही कर आरोपियों को रिमांड पर भेजा गया है।

सामाजिक मांगों को लेकर जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय के सामने हुआ धरना- प्रदर्शन

- सौपा गया ज्ञापन, कॉमरेड अनिल शर्मा भी उतरे समर्थन में

सक्ति। अघोषित आदिम जन जाति मोवार/ मौवार समाज को छत्तीसगढ़ सरकार के आदिवासियो की सूची (जो अभी अघोषित आदिम जन जाति है), में शामिल किए जाने की मांग को लेकर सक्ती जिला कलेक्टर कार्यालय के सामने धरना प्रदर्शन कर राज्यपाल , मुख्यमंत्री और आदिम जनजाति विभाग के उच्च अधिकारियों के नाम मांग पत्र सौंपा,मांग पत्र सौंपने के पूर्व अघोषित आदिम जनजाति मोवार/ मौवार समाज के पूरे छत्तीसगढ़ से बड़ी संख्या में आए लोगो की एक सामाजिक सभा हुई जिसमे प्रदेश अध्यक्ष उदित नारायण मैत्री द्वारा बताया गया की छत्तीसगढ़ राज्य शासन अघोषित आदिम जनजाति मोवार/ मौवार जाति की जाति सर्वे रिपोर्ट केंद्र सरकार को भेजने हेतु अपनी भूमिका सही नही निभा रही है ,जिससे हमारी जाति अपने अधिकारों से लंबे समय से वंचित है,मोवार/ मौवार समाज के (18 गढ़ सचिव) मुनसीर प्रसाद मैत्री ने सभा को संबोधित करते हुए बताया की छत्तीसगढ़ शासन द्वारा अघोषित आदिम जन जाति मोवार/ मौवार समाज को छत्तीसगढ़ राज्य शासन और छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय भी मानती है की हम अघोषित आदिम जनजाति (आदिवासी) है जिसमे अनेक प्रशासनिक प्रक्रिया के तहत कार्य हो चुका है जैसे की को आदिम जनजाति (आदिवासी) का जाति सर्वे रिपोर्ट बनाई जा चुकी है परंतु छत्तीसगढ़ राज्य शासन प्रक्रिया को पूरी करके हमे जनजाति (आदिवासी) घोषित कराने में लंबे समय से बाधा उत्पन्न करते आ रही है।

मोवार/ मौवार समाज के(प्रवक्ता) रेशम लाल मैत्री द्वारा अपने उद्बोधन में कहा गया की अपने समाज को जो अघोषित आदिम जनजाति है घोषित कराने हेतु हर तरह के प्रयास हमेशा जारी रखेंगे ।मोवार/ मौवार समाज की (महिला प्रभाग प्रमुख) श्यामा मैत्री द्वारा सभा में उपस्थित महिलाओं का आह्वान किया गया की अघोषित आदिम जनजाति मोवार/मौवार को आदिवासी घोषित कराने में महिलाएं सभी तरह के प्रयास में डट कर सामना करेंगी।

स्कूली छात्राओं की सरकारी साइकिलों को भी नहीं छोड़ रहे शातिर चोर, पुलिस ने किया साइकिलो के साथ चोरों को गिरफ्तार

सक्ति। जिला सक्ती (छ.ग.) धारा 457,380,34 भादवि थाना जैजैपुर के अप.क. 181/2023 के तहत सरस्वती सायकल योजना अंतर्गत स्कूल प्रांगण में रखे 07 नग सायकल चोरी करने वाले 02 आरोपी चंद घण्टो में गिरफ्तार किये गए है,थाना जैजैपुर की त्वरित कार्यवाही हुई है,मामले का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि प्रार्थी जितेन्द्र कुमार राज पिता तुलाराम राज उम्र 39 साल साकिन तिलकेजा थाना उरगा जिला कोरबा हाल मुकाम आमगांव थाना जैजैपुर जिला सक्ती द्वारा थाना उपस्थित आकर रिपोर्ट दर्ज कराया कि शासन के योजना अंतर्गत निःशुल्क सरस्वती सायकल योजना अंतर्गत वितरण हेतु मिल 16 सायकल में वितरण बाद बचे 08 नग सायकल में से 07 नग सायकल को स्कूल शास उच्च माध्य विद्यालय आमगांव के स्कूल प्रांगण के बरामदा से कोई अज्ञात चोर चोरी कर ले गया है कि रिपोर्ट पर अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना कार्यवाही में लिया जाकर कायमी की सूचना वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एम.आर. आहिरे (भापुस), अति. पुलिस अधीक्षक गायत्री सिंह (रापुसे) एवं अनुविभागीय अधिकारी पुलिस सक्ती मोहम्मद तस्लीम आरिफको अवगत कराकर अज्ञात आरोपी की शीघ्र गिरफ्तारी करने की कुशल दिशा निर्देश प्राप्त होने पर चोरी गये गाल मशरूका एवं अज्ञात आरोपी की पतासाजी हेतु मुखबीर तैनात किया गया। जरिये मुखबीर सूचना मिला कि ग्राम आमगाव निवासी गोपाल गोड एवं प्रवीण खुराना नये नये सायकल रखे हुए है एवं बिकी हेतु ग्राहक तलाश रहे है कि सूचना पर हमराह स्टाफके संदेही गोपाल मोड एवं प्रवीण खुराना के घर जाकर दविश दिया जो घर पर उपस्थित मिले जिसे थाना तलब कर घटना के संबंध में बारिकी से पूछताछ करने पर अपराध घटित करना स्वीकार किये जाने पर धारा 27 साक्ष्य अधि के तहत मेमोरेण्डम कथन लिया गया जो अपने अपने मेमोरेण्डम कथन में चोरी किये सायकल को घर एवं तालाब में छुपाकर रखना एवं जाकर बरामद करा देना बताये।

रेल राज्य मंत्री ने पाटिल कहा- अटल जी ने बनाया था छत्तीसगढ़ राज्य

बाराद्वार की परिवर्तन यात्रा में उमड़ा जन सैलाब

सक्ति। भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़ प्रदेश के जशपुर से निकाली गई परिवर्तन यात्रा बाराद्वार नगर पहुंची जहां ग्राम पंचायत बस्ती बाराद्वार में भरी बारिश में लगभग चार सौ युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं के द्वारा परिवर्तन यात्रा का स्वागत किया गया स्वागत पश्चात रैली के रूप में यात्रा बाराद्वार नगर पहुंची जहां कार्यक्रम प्रभारी पूर्व विधायक डॉ खिलावन साहू की अगुवाई में उनका सामुदायिक भवन के पास अभूतपूर्व स्वागत किया गया। सामुदायिक भवन के पास स्थित सभा स्थल तक सभी अतिथियों को भारत माता की जयघोष के साथ मंच तक ले जाया गया। यहां बता दें कि इस आमसभा की सबसे खास बात यह रही कि भारी बारिश तथा पदयात्रा के देरी होने के बावजूद आमजन और पदाधिकारी कार्यकर्ता सभा स्थल पर डटे रहे। सर्वप्रथम सभी अतिथियों के स्वागत के पश्चात पूर्व मंत्री एवं रायपुर दक्षिण के विधायक बृजमोहन अग्रवाल ने अपने अंदाज में भाषण देते हुए सभी से अपील कि शराब,चावल ,रेत, पीएससी, गौबर सहित जगहों पर भूपेश सरकार ने सिर्फघोटाला ही किया और धान खरीदी के मुद्दे पर बोलते हुएस्न उन्होंने कहा कि 2600 रू जो ये कांग्रेस सरकार दे रही है उसमें से 2200 रू केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार दे रही है और 400 रू को भी ये सरकार किस्तों में कर्ज लेकर दे रही है, उन्होंने कहा कि भाजपा की सरकार में हर तरफ विकास हो रहा था आज कल सभी सरपंच अपने पंचायतों में विकास कार्य के लिए भटक रहे हैं,नेता प्रतिपक्ष, जांजगीर-चांपा के विधायक नारायण चंदेल ने कहा कि इतने बारिश के बाद भी आप सभी की इतनी ज्यादा उपस्थिति ही परिवर्तन की ओर इशारा कर रही है यह उत्साह और आप सभी के जोश को देखकर यह पूरे विश्वास के साथ बोलता हूं की परिवर्तन यात्रा का परिणाम है कि अब तो गांवों में हमारी माताएं भी बोलने लग गई है अब नई सहिबो बदल के रहिबो संबोधन के क्रम में आज इस यात्रा के मुख्य वक्ता केंद्रीय रेल राज्य मंत्री आर एस पाटिल ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ को अटल बिहारी वाजपेई ने इसलिए बनाया था की यहां का सर्वांगीण विकास हो प्रदेश में भाजपा सरकार की सरकार जब तक रही तब तक अटल जी के सपनों पर काम भी हुआ लेकिन छत्तीसगढ़ वासियों को झूठ बोलकर कांग्रेस की ये जो सरकार चल रही है उसमें सिर्फ घोटाला ही हो रहा है इस सरकार की सह प्रदेश के जो युवा मेहनत करके पीएससी की तैयारी करते हैं उसमें भी इन्होंने फर्जी भर्ती कर दी जिसे कोर्ट ने अपना फैसला देकर सरकार की करनी को उजागर कर दिया है केंद्र की मोदी सरकार ने पहले दिन से गरीब, आदिवासियों और पिछड़ों सहित सभी वर्गों का विकास किया है चाहे सभी का बैंक एकाउंट खोलने की बात हो या प्रधानमंत्री आवास योजना, किसान सम्मान निधि या कोरोना काल में सभी का टिकाकरण सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास आधारित विकास नरेन्द्र मोदी की सरकार कर रही है,इस आमसभा में सांसद गुहाराम अजगले,गिरधर गुप्ता मोतीलाल साहू, नवीन मार्कण्डेय, जिलाध्यक्ष कृष्णकांत चंद्रा,गुरूपाल सिंह भल्ला, राम अवतार अग्रवाल,प्रीतम गबेल,रमेश सिंघानिया, विद्या सिदार, टिकेश्वर गबेल,गगन जयपुरिया, मंडल अध्यक्षगण संतोष राठौर,प्रभाष सिंह, अनूप अग्रवाल,प्रेम पटेल, महामंत्रीगण दीपक ठाकुर, गेंदराम मनहर, अमन डालमिया,गोविंद देवांगन,,नटवर नेताम,रवि गबेल, रामाधीन राठौर,पहलवान महंत,संजय राम चन्द्र,संजय रामचंद्र, रामनरेश यादव,अंकित अग्रवाल, युवा मोर्चा से अभिषेक शर्मा, जयप्रकाश साहू, गौतम शर्मा, योगेंद्र साहू,गोविंदा साहू, गीता बनाफर, राहुल जायसवाल, अंजनी जिंदल, जयकिशन केडिया, अमित कलानोरिया, गोपाल जोशी, महाबीर राठौर,हेत राम देवांगन, भुवन भास्कर यादव ,के के देवांगन,अन्नपूर्णा राठौर कमलेश जांगड़े सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता पदाधिकारी एवं आमजन उपस्थित थे।

राजकुमार ने बेस बाल राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त कर जिला सक्ती का नाम रोशन किया

जैजैपुर। 23 वी राज्य स्तरीय बेस बॉल19 में बालक जो कि 22से 25सितंबर 2023 को बिलासपुर में आयोजित था जिसमे नवीन जिला शक्ति के प्रतिनिधित्व करते हुए शा उम विद्यालय कुटराबोड राजकुमार सिदार, ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पूरे राज्य में प्रथम स्थान अर्जित किया इसकी इस उपलब्धि के लिए जिला शिक्षा अधिकारी बीएल खरे जिला क्रीड़ा अधिकारी अमर सिंह राज विकास खंड शिक्षा अधिकारी विजय सिदार, प्राचार्य जी पी कमलेश, कोच खगेश कुमार भारद्वाज ने सभी खिलाड़ियों को इस उपलब्धि के लिए शाला के प्राचार्य एवं सभी स्टाप ने बुके से राजकुमार सिदार का स्वागत किया जिससे कि क्षेत्र में हर्ष का माहौल है।

सार-समाचार

स्कोडा ऑटो ने अंतरराष्ट्रीयकरण की प्रमुख उपलब्धि का जश्न मनाया

रायपुर। स्कोडा ऑटो ने आज वियतनामी बाज़ार में अपने प्रवेश के साथ अपनी अंतरराष्ट्रीयकरण रणनीति में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इस अवसर पर वियतनामी और चेक सरकारों के प्रतिनिधियों और स्कोडा के स्थानीय वितरण एवं उत्पादन सहयोगी, टीसी ग्रुप के साथ एक उत्सवी समारोह आयोजित किया गया। स्कोडा ऑटो ने अपने तेज विस्तार के लिए 30 साझीदारों का डीलर नेटवर्क तक करने और वर्ष 2030 तक वार्षिक 40,000 वाहनों की बिक्री का लक्ष्य हासिल करने की योजना बनाई है। कैरोक और कोडिएक के साथ पहले मॉडल को यूरोप से आयातित किया जाएगा। स्थानीय सीकेडी उत्पादन, जिसे अगले साल से आरम्भ करने की योजना है, का लक्ष्य भारत के साथ इस देश की निकटता के कारण सहकार्यों का लाभ उठाना है। स्कोडा वियतनाम को संभावनाशील आसियान क्षेत्र के लिए एक प्रवेशद्वार के रूप में देखती है। स्कोडा ऑटो के सीईओ, क्लाउस ज़ेल्मर ने कहा कि, हम वियतनाम की गतिशील अर्थव्यवस्था और इस तेज वृद्धिशील बाज़ार में ग्राहकों के एक नए समूह के साथ सहभागिता के लिए अत्यंत उत्साहित हैं। यह हमारी त्वरित अंतरराष्ट्रीयकरण रणनीति में अगला कदम भी है, जिससे आसियान क्षेत्र में हमारे ब्रैंड को मजबूती मिलती और भारत तथा यूरोप के हमारे दो प्रमुख बाज़ारों के बीच सहकार्य में तेजी आयेगी। तैयारियों के दौरान यह स्पष्ट हुआ है कि टीसी ग्रुप हमारे आकर्षक मॉडल पोर्टफोलियो के उत्पादन और बिक्री के लिए एक शानदार सहयोगी है। हमें मिल-जुल कर एक सफल भविष्य की शुरुआत करने की उम्मीद है।

स्टार हेल्थ एंड एलाइड इंश्योरेंस ने रायपुर में 25 करोड़ रुपए के दावों का निपटान किया

रायपुर। भारत की लीडिंग स्टैंडअलोन स्वास्थ्य बीमा कंपनी, स्टार हेल्थ एंड अलाइड इंश्योरेंस ने पिछले 15 महीनों में, यानी अप्रैल-22 से जून-23 तक रायपुर में दावों के निपटान के तहत 25 करोड़ रुपए से अधिक का भुगतान किया है। कंपनी ने नेटवर्क अस्पतालों के दावे निपटाते हुए 20 करोड़ रुपए से अधिक का भुगतान किया। इसी तरह गैर-नेटवर्क अस्पतालों के दावा निपटान में 5 करोड़ रुपए का भुगतान किया गया। अप्रैल 2022 और जून 2023 के बीच, स्टार हेल्थ ने रायपुर में कैशलेस दावा निपटान में 18 करोड़ रुपए और प्रतिपूर्ति दावा निपटान में 7 करोड़ रुपए से अधिक का भुगतान किया। ग्राहकों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को कायम रखते हुए कंपनी ने सभी कैशलेस दावों का निपटारा 2 घंटे के भीतर कर दिया। ज्यादातर मामलों में, कैशलेस उपचार के लिए शुरुआती स्वीकृति 2 घंटे के भीतर जारी कर दी गई। कंपनी ने दावा प्रस्तुत करने के 7 दिनों के भीतर प्रतिपूर्ति दावों का भुगतान करने का प्रयास किया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि ग्राहकों को रिअम्बर्समेंट के माध्यम से भी निपटान में किसी किस्म की परेशानी का सामना न करना पड़े। अप्रैल-2022 से जून-2023 तक 15 महीनों के दौरान, रायपुर में अधिकांश दावे सर्जिकल उपचार से संबंधित थी, जिसमें दावा भुगतान में 13 करोड़ रुपए की राशि शामिल थी। दावों के निपटान में चिकित्सा उपचार की राशि 12 करोड़ रुपए थी। रायपुर में भुगतान किए गए कुल दावों में से, महिलाओं द्वारा किए गए दावों के लिए 11 करोड़ रुपए से अधिक का भुगतान किया गया और पुरुषों द्वारा किए गए दावों के लिए 14 करोड़ रुपए का भुगतान किया गया।

रैलिस इंडिया का नया कीटनाशक 'बेंज़िला' बीपीएच को टारगेट करेगा, धान की पैदावार को सुरक्षित रखने में मदद करेगा'

रायपुर : टाटा उद्यम और भारतीय कृषि इनपुट उद्योग में एक अग्रणी कंपनी, रैलिस इंडिया लिमिटेड ने अपना विशेष फसल सुरक्षा उत्पाद, 'बेंज़िला' लॉन्च किया है। व्यापक अनुसंधान और खेतों में किए गए परीक्षणों के आधार पर बनाए गए, बेंज़िला में जापान की पेटेंटेड बीपीएक्स तकनीक का उपयोग किया गया है। यह एक अत्याधुनिक उत्पाद है जो फसल प्रबंधन प्रथाओं को नए सिरे से परिभाषित करते हुए, पैदावार बढ़ाकर किसानों को लाभ पहुंचाएगा। रैलिस इंडिया लिमिटेड और जापान स्थित कृषि-रसायन कंपनी, निहोन नोह्याकु कंपनी लिमिटेड (जापान) ने रणनीतिक साझेदारी करके बनाए हुए बेंज़िला के अद्वितीय फॉर्मूलेशन में आईजीआर तकनीक को शामिल किया गया है, जिससे धान की फसल में भूरा माहू या ब्राउन प्लांट हॉपर (बीपीएच) संक्रमण का लंबे समय तक और लगातार नियंत्रण किया जा सकता है। पूरे छत्तीसगढ़ और इसी तरह के कई अन्य बाज़ारों में धान उत्पादक किसानों के लिए बीपीएच एक बहुत बड़ा खतरा बना हुआ है। यह पौधों से रस चूसकर फसल को गंभीर नुकसान पहुंचाता है, जिससे 'हॉपर बर्न' होता है। यह ग्रासी स्टंट और रैग्ड स्टंट वायरस जैसी वायरल बीमारियों को फैलाकर अप्रत्यक्ष नुकसान का कारण बनता है। बेंज़िला के बारे में, रैलिस इंडिया लिमिटेड के सीओओ, श्री एस नागराजन ने कहा, छत्तीसगढ़, भारत के दस मुख्य धान उत्पादन करने वाले राज्यों में से एक है।

पखांजूर क्षेत्र में देखा रीपा का कामकाज, समूहों की महिलाओं को किया प्रोत्साहित

कलेक्टर ने किया जिले के दूरस्थ इलाकों का सघन दौरा, अधिकारियों को दिए आवश्यक निर्देश

ग्राम कापसी, बांदे, डोंडे, पुरूषोत्तम नगर, सावेर, मरोड़ा पहुंचकर हुईं रूबरू

अशोक जैन

कांकेर लोकप्रिय कलेक्टर डॉ. प्रियंका शुक्ला ने आज जिले के दूरस्थ वनांचल क्षेत्र में अवस्थित पखांजूर इलाके का दौरा किया, जहां उन्होंने प्रदेश शासन की महत्वाकांक्षी योजनाओं का जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन का जायजा लेते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने गौठान, रीपा सेंटर में निर्माणाधीन प्रोसेसिंग यूनिट और मतदाता सूची विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम की प्रगति की जानकारी ली।

कलेक्टर डॉ. शुक्ला ने आज अंतागढ़ विधानसभा क्षेत्र के ग्राम छोटे कापसी में स्थित मतदान केंद्र क्रमांक 31 का औचक निरीक्षण किया जहां बीएलओ से मतदाता सूची में नाम जोड़ने, विलोपित करने तथा संशोधित करने के संबंध में अब तक की गई कार्रवाई की जानकारी ली। उन्होंने इस दौरान पंजी का निरीक्षण कर सभी प्रविष्टियां पूर्ण करने के निर्देश दिए। साथ ही कक्षा 12वी के क्लासरूम में जाकर विद्यार्थियों से उनकी अभिरुचि और भावी लक्ष्य के बारे में उन्होंने चर्चा की।

इसके उपरांत वे ग्राम डोंडे में रीपा कार्यक्रम के तहत स्थापित की जा रही फ्लाई ऐश ब्रिक्स और मल्टी फीड और लेयर फार्मिंग की प्रॉसेसिंग यूनिट का अवलोकन किया। उन्होंने यूनिट स्थापित करने के लिए आवश्यक औपचारिकताएं पूर्ण करने के निर्देश जनपद पंचायत के सीईओ को दिए। साथ ही आसपास के आंगनबाड़ी केंद्रों में अंडे की आपूर्ति हेतु कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए। तत्पश्चात वे पखांजूर में बीएलओ की बैठक लेकर मतदान प्रतिशत में वृद्धि करने आवश्यक प्रयास करने के निर्देश दिए। इसके बाद वहां के स्ट्रांग रूम का निरीक्षण कर पखांजूर में आदर्श मतदान केन्द्र तैयार करने के निर्देश दिए जहां सेल्फी जोन भी स्थापित किया जाएगा।

प्रत्येक अन्नदाता को मिले उनकी मेहनत का वाजिब दामः कलेक्टर

पखांजूर क्षेत्र में प्रवास के दौरान कलेक्टर डॉ. शुक्ला आज दोपहर को पुरूषोत्तम नगर पहुंचीं, जहां पर उन्होंने मक्का प्रोसेसिंग यूनिट का अवलोकन कर कृषक समूह के सदस्यों से रूबरू हुईं। उन्होंने बताया कि इस क्षेत्र के मक्का और मछली उत्पादन की काफी संभावनाएं हैं और यहां के किसानों को उनकी मेहनत का वाजिब दाम मिले, इसके लिए जिला प्रशासन कृत संकल्पित है। कलेक्टर ने बताया कि बिचौलियों की मध्यस्थता खत्म करने और मेहनतकश किसानों को उनका हक दिलाने के उद्देश्य से यह प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित की गई है। उन्होंने समूह के जरिए संगठित होकर सबको उचित दिशा में सार्थक प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस दौरान एफपीओ के सदस्यों ने बताया कि इस साल मक्का विक्रय एवं प्रोसेसिंग का टर्नओवर 2.15 करोड़ रुपए रहा। कलेक्टर ने आने वाले दिनों में इसमें और अधिक वृद्धि के लिए समूह के सदस्यों को अपनी शुभकामनाएं दीं।

इसके बाद वे ग्राम सावेर के महात्मा गांधी औद्योगिक पार्क (रीपा) में निर्माणाधीन फिश फीड यूनिट, दोना पत्तल निर्माण यूनिट का अवलोकन कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए। इस दौरान ग्राम मरोड़ा के चेक पोस्ट में संधारित पंजी का निरीक्षण किया तथा आगामी निर्वाचन के मद्देनजर वहां से गुजरने वाले वाहनों की आवाजाही पर मुस्तैदी से निगाह रखने के निर्देश ड्यूटी पर तैनात पुलिस कर्मी को दिए। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ श्री सुमित अग्रवाल, एसडीएम पखांजूर बी एस उईके सहित विकासखंड स्तर के अधिकारी मौजूद रहे।

स्वास्थ्य केंद्रों में मनाया गया विश्व गर्भनिरोधक दिवस

दंतेवाड़ा(भारत भास्कर) 28 सितंबर 2023। देश की बढ़ती जनसंख्या एक बड़ी समस्या के रूप में आ रही है। सरकार लगातार परिवार नियोजन को लेकर जागरूकता अभियान चलाती रहती है। इसलिए हर साल 26 सितंबर को विश्व गर्भनिरोधक दिवस मनाया जाता है। यह दिन गर्भनिरोधक के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाने के बारे में है। वैवाहिक जोड़ों को यह आजादी होती है कि वे कब पेरेंट्स बनना चाहते हैं। इसके लिए महिलाओं का जागरूक होना जरूरी है, कि वे अनप्लांड प्रेगनेंसी से कैसे बच सकती हैं। परिवार नियोजन के अलावा गर्भनिरोधक एचआईवी एड्स और अन्य यौन संक्रमणों से भी रोकता है। प्रेगनेंसी को रोकने के लिए गर्भनिरोधक का प्रयोग किया जाता है। कंडोम, बर्थ कंट्रोल पिल, आईयूसीडी (ढ्ढष्ठष्ठ) जैसे कॉपर टी और इंजेक्टेबल गर्भनिरोधक कुछ गर्भनिरोधक हैं।

आज के इस कार्यक्रम अंतर्गत दंतेवाड़ा के विभिन्न स्वास्थ्य केंद्रों में सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों के नेतृत्व में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्वास्थ्य मेला का आयोजन किया गया एवं परिवार नियोजन के अलावा, गर्भनिरोधक एचआईवी एड्स और अन्य संक्रमणों के बारे में जानकारी दी गई। उपस्थित महिलाओं एवं पर निवासियों को गर्भनिरोधक साधनों को अपनाकर महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाया जा सकता है, दंपत्तियों जोड़ों को दो बच्चो के बीच कितना अंतराल होना चाहिए, वे कब अपना परिवार शुरू कर सकते हैं। ताकि मां और बच्चों की डेथ रेट कम हो सके और शादी के बाद अनप्लांड प्रेग्नेंसी को भी रोक पाएं। गर्भ निरोधक के प्रकार एवं गर्भनिरोधक के यूज से मैटरनल डेथ, बच्चों के डेथ रेट और अनएक्सपेक्टेड प्रेग्नेंसी और गर्भपात कम हो सके इस बारे में भी जानकारी दी गई। इसी कड़ी में ग्राम पंचायत चितालंका, नेटापुर, मेटापल 1, कोरलापाल, गुमड़ा, गढ़मीरी, रेंगनार, कोडेनार, हितावर, के स्वास्थ्य एवं आंगनवाड़ी केंद्र में भी विश्व गर्भनिरोधक दिवस का विशेष आयोजन किया गया, जिसमे ग्राम पंचायत सरपंच, उपसरपंच, वार्ड पंच, सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी के नेतृत्व में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में महिलाओं, पुरुषों एवं पारा निवासियों के साथ, आंगनबाड़ी केंद्र कार्यकर्ता, आर.एच.ओ., मितानिन ट्रेनर, सुपरवाइजर्स, मितानिन दीदी के साथ विभिन्न केंद्रों पर पिरामल फाउंडेशन से प्रोग्राम लीडर दीपक शाह एवं गांधी फैलो ज्योति बाबू, ज्योति सिंह, सिद्धि शिंदे उपस्थित रहे।

भाजपा प्रत्याशी आसाराम नेताम लगातार जनसंपर्क कर रहे हैं

अशोक जैन

कांकेर। कांकेर विधानसभा अंतर्गत भाजपा मंडल ?धनेलीकन्हार में भारतीय जनता पार्टी के अधिकृत विधायक प्रत्याशी आशा राम नेताम द्वारा जनसंपर्क अभियान का चौथा दिवस कार्यकर्ताओं के साथ घर घर जाकर भेंट मुलाकात कर आशीर्वाद ले रहे है, इस कार्यक्रम में वेदबती दुग्गा, रेशमा केसरी महिला मोर्चा महामंत्री जनपद सदस्य क्र. 3 कोदागांव अशोक कचलाम भावेश आरदे, लालदास साहू, केजूराम दुग्गा, मधुसूदन साहू, राधेश्याम जयते, गणेश साहू, हिरेन्द्र कुबेर, जय कस्तुरे, लादू पटेल, दयाराम आरदे एवं गाँव के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे, ग्राम कोदागांव, पोटगांव में आदि गांवों में जाकर जन संपर्क किया गया। जनसंपर्क अभियान के दौरान भाजपा प्रत्याशी आसाराम नेताम को भाजपा कार्यकर्ता एवं मतदाताओं का भरपूर सहयोग मिल रहा है

भाजपा मंडल सरोना में भाजपा के प्रत्याशी आसाराम नेताम का 30 सितंबर से जनसंपर्क

अशोक जैन

कांकेर। भाजपा मंडल सरोना में कांकेर विधानसभा प्रत्याशी आसाराम नेताम का 30 सितंबर से 2 अक्टूबर तक जनसंपर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया है इस दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं एवं मतदाताओं से जनसंपर्क करेंगे भाजपा मंडल सरोना में मंडल प्रभारी तारा ठाकुर मंडल अध्यक्ष यशवंत सुरोजिया जिला मंत्री हीरा मरकाम भाजयुमो जिला महामंत्री संजू गोपाल साहू सहित मंडल के सभी वरिष्ठ कार्यकर्ता मंडल पदाधिकरियो की उपस्थिति में दिनांक 30. सितंबर से 2. अक्टूबर तक तीन दिवसीय जनसंपर्क सुनिश्चित की गई है मंडल के सभी मोर्चा प्रकोष्ठ सहित सभी शक्ति केंद्र की प्रभारी बूथ के अध्यक्ष पालक सभी को अपील किया जाता है कि उक्त तिथि पर अपना उपस्थिति सुनिश्चित कर

30. सितंबर - पुरियारा, करप, सरईटोला, डवरखार, सिंघनपुर, सारंडा, कुम्हानखार, झूलनातेंदू, लेंडारा, ठेमा, बासबत्तर, तिरयारपानी, निशानखरा, चिन्दखड़क, रावस आमपानी,खलारी, साल्हेभांट, सरोना, चोरिया, दलदली

01.10.2023 - मालगांव, बरकई, सारवनडी, साल्हेटोला,धनोरा, दुधावा, आंछीडोंगरी, मसूरपुटा, छापरपारा, साईंमुंडा, बासनवाही, बांगाबारी, मांडाभरी,मौलीपारा, भीमाडीही

02.10.2023 - बुंदेली, सोनपुर, झलियामारी, मानिकपुर, देवरी, धनेसरा, भैंसमुंडी, पेंड्रावन, अभनपुर, सिंगारवाही, भीरौद कापसपुट्टी, शामतरा, घोटियावाही, गहरीनबांधा, खजरावान, देवडोंगर*में में जनसंपर्क करेंगे उक्त जानकारी सरोना भाजपा मंडल महामंत्री टेकेशवर सिन्हा कन्हैया नैताम मंडल मीडिया प्रभारी अशोक जैन ने दी

मुख्यमंत्री ने दी जिलेवासियों को 495.90 करोड़ लागत के 250 कार्यों की सौगात

दंतेवाड़ा (भारत भास्कर)। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने जिलेवासियों को 495.90 करोड़ लागत के 250 कार्यों की सौगातें दी है। उन्होंने आज मुख्यमंत्री निवास रायपुर में आयोजित कार्यक्रम में उक्त कार्यों का वर्चुअल लोकार्पण शिलान्यास किया। जिनमें लोकार्पण-106, भूमिपूजन- 144 शामिल थे। लोकार्पण एवं भूमि पूजन के कुल कार्य- 250 थे। इस वर्चुअल कार्यक्रम के माध्यम से जिलेवासियों को कई सौगातें दी। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि ये वर्चुअल कार्यक्रम करने का निर्णय आने वाले दिनों में लगने वाले आचार संहिता देखते हुए लिया गया है। ताकि आने वाले दिनों में कोई बाधा ना आये और इतने कम समय में सभी जिलों तक पहुँचना संभव नहीं है इसलिए इस वर्चुअल कार्यक्रम के माध्यम से लोकार्पण, भूमिपूजन और शिलान्यास किया गया।

मुख्यमंत्री द्वारा लोकार्पित कार्यों में विकासखण्ड दंतेवाड़ा अंतर्गत माँ दंतेश्वरी कॉरीडोर एवं रिवर फ्रंट लागत राशि रू 4330.916 लाख, माँ दंतेश्वरी मंदिर परिसर में ज्योति कलश भवन लागत राशि रू 801.96 लाख, एकता परिसर लागत राशि रू 430.38 लाख, हर्बल गार्डन दंतेवाड़ा लागत राशि रु 403.39 लाख, मुक्तिधाम दंतेवाड़ा लागत राशि रु 302.47 लाख, महतारी सरोवर चितालंका लागत राशि रू 195.83 लाख, आदिवासी संग्रहालय लागत राशि रू 164.37 लाख, ग्रंथालय लागत राशि रू 108.99 लाख, प्रवेश द्वार लागत राशि 96.00, माँ दंतेश्वरी हाईस्कूल मैदान निर्माण लागत राशि रु 82.01 लाख, पर्यटन सूचना केंद्र लागत राशि 261.15 लाख की सौगातें दी वही विकासखंड गीदम के अंतर्गत नागफनी मंदिर विकास लागत राशि रू 127.07 लाख, बारसूर प्रवेश द्वार लागत राशि रु 68.07 लाख, 54 स्वामी आत्मानंद हिन्दी मीडियम स्कूल का विकास लागत राशि रु 3175.17 लाख की सौगातें दी है। विकासखंड कातेकल्याण के अन्तर्गत ग्राम पंचायत बड़े लखापाल, गुमियापाल और परवेली में विद्युतीकरण लागत राशि रु 668.839 लाख, ग्रामीण अंचल मे सोलर स्ट्रीट लाईट स्थापना लागत राशि रू105.33 लाख समेत तीन कार्यों की सौगातें दी है। इस अवसर पर कलेक्टोरेट सभाकक्ष में कलेक्टर विनीत नंदनवार, जिला पंचायत अध्यक्ष सुश्री तूलिका कर्मा, उपाध्यक्ष नगर पालिका धीरेंद्र प्रताप, जिला पंचायत सीईओ कुमार बिश्वरंजन और अन्य विभाग के अधिकारीगण मौजूद रहे।

संक्षिप्त समाचार

घर के बाहर खड़ी जूपिटर पार

रायपुर। गली नंबर 2 जयहिंद चौक लोधीपारा में घर के बाहर खड़ी जूपिटर को अज्ञात चोर ने पार कर दिया। प्रार्थी की शिकायत पर मोवा पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी उत्तम जंघेल 30 वर्ष गली नंबर 2 जयहिंद चौक लोधीपारा का रहने वाला है। बताया जाता है कि वह अपनी जूपिटर वाहन क्रमांक सीजी 04 पीबी 2594 को घर के बाहर खड़ी किया था, तभी अज्ञात चोर ने पार कर दिया। चोरी गए जूपिटर की कीमत करीब 35 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है। प्रार्थी की शिकायत पर मोवा पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है।

शराब के लिए पैसा नहीं देने पर युवक को पीटा

रायपुर। जीवन विहार कालोनी में शराब पीने के लिए पैसा नहीं देने पर चार युवकों ने एक युवक से गाली-गलौज कर मारपीट किया और नुकीली चीज से मारकर चोट पहुंचाया। प्रार्थी की शिकायत पर तेलीबांधा पुलिस ने आरोपियों के खिलाफअपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी महेश सोनी 22 वर्ष राजीव गांधी नगर खम्हारडीह का रहने वाला है। बताया जाता है कि आरोपी भुरू, शेखर, दादू व अन्य प्रार्थी के पास आया और शराब पीने के लिए पैसा मांगा। पैसा नहीं देने पर आरोपियों ने प्रार्थी से गाली-गलौज कर मारपीट किया। प्रार्थी की शिकायत पर तेलीबांधा पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ धारा 294, 506, 327, 323, 34 के तहत अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

पुरानी रंजिश के चलते दो पक्ष भिड़े

रायपुर। फोकटपारा देवेन्द्र नगर में पुरानी रंजिश को लेकर दो पक्ष आपस में भिड़ गए। दोनों पक्षों की शिकायत पर देवेन्द्र नगर पुलिस ने काउंटर अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसासर पहले पक्ष से प्रार्थिया समीम बेगम 62 वर्ष ने थाना में शिकायत किया कि आरोपिया वहिदा बेगम प्रार्थिया के पति सकील अहमद से गाली-गलौज कर रहा था, जिसे मना करने पर आरोपिया ने प्रार्थिया से गाली-गलौज कर मारपीट किया। वहीं दूसरे पक्ष से प्रार्थिया वहिदा बेगम 39 वर्ष ने थाना में शिकायत किया कि आरोपी शकील, समीम, रेहाना व गफुर ने पुरानी रंजिश के चलते प्रार्थिया से गाली-गलौज कर मारपीट किया। दोनों पक्षों की शिकायत पर देवेन्द्र नगर पुलिस ने काउंटर अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

शादी करने से मना करने पर युवती से मारपीट

रायपुर। सरस्वती नगर पंडरी में शादी करने से मना करने पर युवक ने युवती से गाली-गलौज कर मारपीट किया। प्रार्थिया की शिकायत पर सिविल लाइन पुलिस ने आरोपी के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थिया लक्ष्मी तांडी 18 वर्ष सरस्वती नगर पंडरी की रहने वाली है। प्रार्थिया ने थाना में शिकायत किया कि आरोपी शेख मुस्तफा प्रार्थिया से शादी करने के लिए जिद कर रहा था। जिससे प्रार्थिया ने मना किया तो आरोपी ने प्रार्थिया से गाली-गलौज कर मारपीट किया। प्रार्थिया की शिकायत पर सिविल लाइन पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धारा 294, 506, 323 के तहत अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

अवैध शराब बेचते तीन पकड़ाए

रायपुर। राजधानी के अलग-अलग थाना क्षेत्रों में अवैध शराब बेचते तीन आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से 62 पाव देशी व 80 पाव अंग्रेजी शराब जब्त किया है। मिली जानकारी के अनुसार पुरानी बस्ती पुलिस ने वाटर वर्ल्ड भाठागांव के पास अवैध शराब के साथ आरोपी देवकुमार रात्रे 32 वर्ष को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इसके पास से 22 पाव देशी शराब व बिक्री रकम 600 रुपए जब्त किया है। इसी तरह डीडीनगर पुलिस ने चंगोराभाठा महादेवा तलाब के पास आरोपी नारायण यादव 43 वर्ष को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इसके पास से 80 पाव अंग्रेजी शराब जब्त किया है। वहीं आमानाका पुलिस ने आरोपी श्रवण नेताम 38 वर्ष के पास से 40 पाव देशी शराब जब्त किया है। पुलिस ने सभी आरोपियों के खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत कार्रवाई की है।

सरेआम शराब पीते 7 पकड़ाए

रायपुर। राजधानी पुलिस ने नशेडियों के खिलाफअभियान चलाकर सरेआम शराब पीते 7 लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफआबकारी एक्ट के तहत कार्रवाई की है। मिली जानकारी के अनुसार सरस्वती नगर पुलिस ने मोतीलाल नगर कोटा के पास सरेआम शराब पीते आरोपी संजय नायक 53 वर्ष, राजेश छूरा 42 वर्ष व कृष्णा मोंगराज 42 वर्ष को गिरफ्तार किया है। इसी तरह मौदहापारा पुलिस ने आरोपी किशन गार 27 वर्ष व दुर्गेश कहार 23 वर्ष को गिरफ्तार किया है। वहीं टिकरापारा पुलिस ने आरोपी प्रवीण कुमार 26 वर्ष व माना पुलिस ने आरोपी दीपक यादव 19 वर्ष को गिरफ्तार किया है।

नई दिल्ली के छत्तीसगढ़ निवास का भी हुआ लोकार्पण

अधोसंरचना निर्माण से मिलेगी आर्थिक विकास को गति : मुख्यमंत्री श्री बघेल

■ वर्चुअल कार्यक्रम में प्रदेशवासियों को दी 4471 करोड़ रूपए की लागत के 2715 विकास कार्यों की सौगात

रायपुर/ संवाददाता

मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने आज राजधानी रायपुर से प्रदेशवासियों को 16 विभागों के 4 हजार 471 करोड़ रूपए की लागत के 2715 विकास कार्यों की सौगात दी। मुख्यमंत्री निवास कार्यालय में आयोजित वर्चुअल लोकार्पण-भूमिपूजन एवं शिलान्यास कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि ये सभी विकास कार्य अधोसंरचनाओं के विकास से जुड़े हैं जो जनसुविधाओं को और बेहतर बनाएंगे। इन कार्यों का सीधा संबंध हमारे आर्थिक विकास से भी है। इन विकास कार्यों में 2 हजार 368 करोड़ रूपए की लागत के 1121 कार्यों का भूमिपूजन तथा 1705 करोड़ की लागत के 1530 कार्यों का लोकार्पण तथा 398 करोड़ रूपए लागत के 64 कार्यों का शिलान्यास शामिल है। उन्होंने इस मौके पर राजधानी नई दिल्ली के द्वारका में 60 करोड़ 40 लाख के लागत से बने सर्व सुविधा युक्त नवनिर्मित छत्तीसगढ़ निवास का वर्चुअल शुभारंभ भी किया और उन्होंने प्रदेशवासियों को इन सभी विकास कार्यों के लिए बधाई और शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने पिछले 05 सालों में सामाजिक, आर्थिक सशक्तिकरण के साथ-साथ अधोसंरचना निर्माण को प्राथमिकता के साथ पूरा कर रही है। हमारी जनहितैषी योजनाओं का लाभ प्रदेश के सभी वर्गो को समान रूप से मिल रहा है। लोगों की जरूरतों के अनुरूप हमारी योजनाएं बनी और उसके प्रभावी क्रियान्वयन ने छत्तीसगढ़ के विकास को गति दी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ के लोगों को नई दिल्ली में ठहरने के लिए छत्तीसगढ निवास के रूप में नया भवन मिल गया है। इससे प्रदेश के जरूरतमंदों को सहित सभी के रूकने-ठहरने की दिक्कत दूर हो जाएगी। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री ने पिछले दो दिनों के भीतर ही राज्य तथा जिला स्तर पर विभिन्न विभागों तथा जनसुविधाओं से जुड़े 10 हजार 551 करोड़ रूपए की लागत के निर्माण कार्यों की सौगात प्रदेशवासियों को दी है। उप मुख्यमंत्री श्री टीएस सिहदेव कार्यक्रम में वर्चुअल रूप से जुड़े। श्री सिंहदेव ने अपने वर्चुअल सम्बोधन में कहा कि छत्तीसगढ़ को आगे ले जाने का काम इसी तरह होता रहेगा। इन विकास कार्यों से आमजनों की सुवधिाएं बढ़ेगी। मुख्यमंत्री निवास कार्यालय में लोक निर्माण विभाग मंत्री श्री ताम्रध्वज साहू, श्री अपर मुख्य सचिव श्री सुब्रत साहू, प्रमुख सचिव गृह श्री मनोज पिंगुआ, कृषि उत्पादन आयुक्त डॉ. कमलप्रीत सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव श्री अंकित आनंद, श्री सिद्धार्थ कोमल सिंह परदेशी, श्री एस. भारतीदासन सहित वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए। कार्यक्रम में अपेक्स बैंक के अध्यक्ष श्री बैजनाथ चंद्राकर वर्चुअली शामिल हुए। देश की राजधानी नई दिल्ली के द्वारका में 60 करोड़ 42 लाख रूपए की लागत से नवनिर्मित छत्तीसगढ़ निवास में कुल 61 कमरे और 13 सूट हैं। यह भवन आधुनिकतम सुविधाओं से सुसज्जित है। शासकीय अथवा निजी कार्य से दिल्ली जाने वाले छत्तीसगढ़वासियों की सुविधा के लिए यह भवन तैयार किया गया है।

चार दिन में छत्तीसगढ़ की छह लोकसभा और 36 विधान सभा को साधेंगे मोदी

रायपुर। संवाददाता

विधानसभा चुनाव 2023 व लोकसभा चुनाव 2024 के मद्देनजर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहली प्राथमिकता में छत्तीसगढ़ है। यही वजह है कि वह तीन महीने के भीतर लगातार तीसरी-चौथी बार क्रमशः बिलासपुर और बस्तर प्रवास पर आ रहे हैं। इसके पूर्व वे रायपुर और रायगढ़ में चुनावी सभा ले चुके हैं। प्रधानमंत्री 30 सितंबर को बिलासपुर संभाग की चार लोकसभा और 24 विधानसभा सीटों को साधेंगे। इसी तरह तीन अक्टूबर को बस्तर में दो लोकसभा और 12 विधानसभा सीटों पर आदिवासियों के बीच भाजपा की पैठ मजबूत करेंगे। दोनों दौरों में प्रधानमंत्री की छह लोकसभा और 36 विधानसभा क्षेत्रों को साधने की कोशिश होगी। भाजपा की परिवर्तन यात्रा के समापन समारोह के बहाने प्रधानमंत्री प्रदेश के सबसे बड़े बिलासपुर संभाग के आठ जिलों के अंतर्गत 24 विधानसभा को साधेंगे। वर्तमान में यहां 13 सीटों पर कांग्रेस के विधायक हैं। सात सीटें भाजपा के पास, दो छत्तीसगढ़ जनता कांग्रेस (जे) और दो सीटें बहुजन समाज पार्टी के पास हैं। यानी भाजपा का जनाधार यहां कम है। इसी तरह लोकसभा सीट के हिसाब से देखें तो बिलासपुर संभाग में छत्तीसगढ़ के 11 लोकसभा सीट में से चार लोकसभा सीटें केवल बिलासपुर संभाग में हैं। इनमें से तीन पर भाजपा का कब्जा और एक सीट कांग्रेस के खाते में है। बिलासपुर लोकसभा सीट में भाजपा सांसद अरुण साव हैं, जो कि वर्तमान में प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष हैं। कोरबा लोकसभा सीट में कांग्रेस सांसद ज्योत्सना महंत, रायगढ़ लोकसभा सीट में भाजपा सांसद गोमती साय और जांजगीर-चांपा में भाजपा सांसद गुहाराम अजगले हैं। इसके अलावा इसी संभाग के जांजगीर-चांपा से विधायक नारायण चंदेल विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष हैं। इसके पहले जून में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा भी बिलासपुर में बड़ी सभा कर चुके हैं। कांग्रेस ने लगाई थी सेंध पिछले लोकसभा चुनाव में बस्तर में कांग्रेस ने सेंध लगाई थी।

भूपेश बघेल को काम नहीं सिर्फ नाम चाहिए-चंद्राकर

रायपुर/ संवाददाता

पूर्व मंत्री और कुरूद विधायक अजय चंद्राकर ने आरोप लगाया है कि भूपेश बघेल सरकार ने मुख्यमंत्री आवास न्याय के नाम का नया ढोंग रचा है, अपने नेता को बुलाकर प्रदेश की जनता को बरगलाने का प्रयास कर रहे हैं कि गरीबों के लिए 7 लाख मकान बनाए जायेंगे। जो मुख्यमंत्री प्रदेश के गरीबों को पक्का मकान से वंचित रखा, जिनके कच्चे मकान बारिश में ढह गए, ऐसे सभी पीड़ित परिवार भूपेश सरकार को सबक सिखाएंगे। पूर्व मंत्री श्री चंद्राकर ने धमतरी के बठेना समेत अन्य वार्डो के रहवासियों को पीएम आवास योजना का लाभ नहीं मिलने पर शहर सरकार और प्रदेश की भूपेश सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि रोजी मजूदरी का अपना पालन पोषण कर रहे वार्डो के अधिकांश गरीब मजदूर तबके के लोग कच्चे मकानों में ही जैसे तैसे गुजर बसर कर रहे हैं। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऐसे गरीब तबके के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना शुरू की थी ताकि उनके पास खुद का अपना आशियाना हो, मगर प्रदेश की भ्रष्ट और घोटालेबाज सरकार ने इन गरीब तबके के लोगों का सपने को चकनाचूर कर दिया। छत्तीसगढ़ के कांग्रेस सरकार की ग्रामीण आवास योजना को लेकर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को आड़े हाथों लेते हुए उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ ग्रामीण आवास योजना के नाम पर 30 हजार हितग्राहियों को केवल स्वीकृति पत्र दिया गया है, 47 हजार पक्का मकान देने के लिए 1 हजार करोड़ रुपए का बजट दिया गया है। एक पक्का मकान बनाने के लिए मात्र 21 हजार रुपए दिए जाएंगे, इतने पैसे में पक्का मकान कैसे बनेगा? यह न्याय योजना भी मकान बनने की आस लगाए ।

सिमरन रेसीडेंसी अनंत विहार कॉलोनी मोवा रायपुर में मनमोहक प्रतिमा

यदि मोदी खाते न खुलवाते तो सारा पैसा कांग्रेसी खा जाते

राहुल कौन सी बटन दबाते हैं कि नोटों के बंडल पहुंच जाते हैं-साव

■ भूपेश योजना का नाम बदल रहे हैं, ठगने का काम वही है

रायपुर/ संवाददाता

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सांसद अरुण साव ने कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि जन धन खातों का विरोध करने वाले आज कह रहे हैं कि हम ने एक बटन दबाई तो हजार करोड़ रुपये गरीबों के खाते में पहुंच गए। राहुल गांधी को अपने पिता के जमाने में जनता के एक रुपये में से 85 पैसा बीच में हड़प जाने के लिए गरीबों से माफी मांगते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार व्यक्त करना चाहिए कि उन्होंने गरीबों के जन धन खाते खुलवाकर कांग्रेस संस्कृति जन्य लूट से मुक्ति दिला दी। यदि प्रधानमंत्री मोदी ये खाते नहीं खुलवाते तो गरीबों का अन्न खा जाने वाले कांग्रेसी गरीब कल्याण की सारी योजनाओं का पैसा खा जाते। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सांसद अरुण साव ने कहा कि सबसे पहले तो कांग्रेस सांसद राहुल गांधी यह बतायें कि वे ऐसी कौन सी बटन दबाते हैं कि 2 हजार करोड़ का शराब घोटाला हो जाता है और रकम सीधे दिल्ली पहुंच जाती है। राहुल कौन सी बटन दबाते हैं कि छत्तीसगढ़ की गरीब जनता का पैसा असम, यूपी, उत्तराखंड, हिमाचल, कर्नाटक सहित उन राज्यों में पहुंच जाता है, जहां कांग्रेस को चुनाव लड़ने के लिए पैसा चाहिए होता है। राहुल कौन सी बटन दबाते हैं कि कोल परिवहन घोटाला हो जाता है।

नागभूषण राव को दूसरी नोटिस, युकांध्यक्ष सजल चन्द्राकार निष्कासित

रायपुर। कांग्रेस की अनुशासन समिति ने राजधानी के एमआईसी सदस्य नागभूषण राव को पुनः नोटिस जारी करने महामंत्री मलकीत सिंह को पत्र लिखा है । समिति के अध्यक्ष धनेंद्र साहू ने बताया कि राव के खिलाफकुछ और आरोप समिति को मिले हैं, इस लिए अंतिम निर्णय से पहले ,नए आरोपों पर भी जवाब ले रही है। उसके बाद कोई निर्णय लिया जाएगा। बता दें कि राव को प्रदेश के वरिष्ठतम विधायक सत्यनारायण शर्मा के खिलाफबयानबाजी के लिए पहली नोटिस दी गई थी । राव ने उसका जवाब दे दिया है । दूसरी ओर युकां प्रदेश नेतृत्व ने रायपुर ग्रामीण के जिलाध्यक्ष सजल चंद्राकर (आरंग)को अध्यक्ष पद से निष्कासित किया है। ये कार्रवाई उसके दो कथित ऑडियो वायरल होने के बाद हुई है। इस ऑडियो में एक युवक ने उन्हें आयुष्मान भवः होने का आशीर्वाद दिया। लेकिन इस लाईन से वो (सजल चंद्राकर) इतना आहत हो गया कि उसने युवक के साथ जमकर गाली-गलौच की।

थीम पर बने गणेश पंडाल कर रहे श्रद्धालुओं को आकर्षित...

■ विशाल प्रतिमाओं व साज-सज्जा देख लोग रोमांचित

■ गणेशोत्सव देखने दूर-दूर के श्रद्धालु पहुंच रहे राजधानी

रायपुर। राजधानी में गणेशोत्सव की धूम देखते ही बन रही है। गणेश पंडालों में देर रात तक श्रद्धालुओं की भीड़ जुट रही है। वहीं आसपास के ग्रामीण इलाकों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु गणेश जी का दर्शन करने राजधानी पहुंच रहे हैं। शहर में इस समय एक हजार से अधिक स्थानों पर छोटी-बड़ी प्रतिमाएं स्थापित हैं। अधिकतर स्थानों में खासकर पुराने गणेशोत्सव समितियों द्वारा इस वर्ष भी थीम के आधार पर पंडालों का डेकोरेशन किया गया है। शहर के कालीबाड़ी चौक स्थित गणेश जी का पंडाल अंतरिक्ष यान, रॉकेट के डिजाइन पर बनाया गया है। इसे देखने दूर-दूर से श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। इसी तरह शहर के कई इलाकों में फल-फूल, बीजों व तरह-तरह के अनाजों से निर्मित गणेश जी की प्रतिमाएं स्थापित की गई है। राजधानी रायपुर में चल रहे गणेशोत्सव की धूम न केवल शहर में है, बल्कि पूरे प्रदेश में अब रायपुर का नाम गणेश उत्सव के लिए विख्यात हो चुका है। यही वजह है कि ग्रामीण अंचलों के साथ ही आसपास के शहरों से भी लोग यहां गणेशोत्सव में शामिल होने पहुंच रहे हैं।

राज्य के प्रवासी श्रमिकों के सामाजिक सुरक्षा और सशक्तीकरण के लिए हुआ मंथन

मुख्यमंत्री ने श्रमिकों-किसानों के बेहतरी योजना बनाकर कर रही सशक्त

रायपुर/ संवाददाता

राज्य के प्रवासी श्रमिकों के सामाजिक सुरक्षा और सशक्तीकरण के लिए हुआ मंथनराज्य के प्रवासी श्रमिकों के सामाजिक सुरक्षा और सशक्तीकरण के लिए हुआ मंथनराज्य के प्रवासी श्रमिकों के सामाजिक सुरक्षा और सशक्तीकरण के लिए हुआ मंथन छत्तीसगढ़ भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण मंडल और यूएनडीपी के संयुक्त तत्वाधान में आज यहां राजधानी रायपुर के एक निजी होटल में प्रवासी श्रमिकों के विशेष संदर्भ में श्रमिक कल्याण को सशक्त बनाना और राज्य में सामाजिक सुरक्षा को प्रशस्त करना विषय पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला में मंडल के अध्यक्ष श्री सुशील सन्नी अग्रवाल शामिल हुए। श्री अग्रवाल ने कार्यशाला के शुभारंभ सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल की सोच है कि वे राज्य के श्रमिक और किसान सशक्त हो, सामाजिक सुरक्षा के साथ-साथ श्रमिकों को सामाजिक सम्मान मिले। इसके लिए राज्य सरकार मुख्यमंत्री की पहल पर श्रमिक हितैषी योजनाओं के माध्यम से उनके सशक्तिकरण के लिए काम कर रही है, ताकि अंतिम छोर के श्रमिक और किसान को इसका लाभ मिल सके। छत्तीसगढ़ भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण मंडल के अध्यक्ष श्री अग्रवाल ने कहा कि योजना बनाना आसान है लेकिन

योजना बनाकर उनका क्रियान्वयन करना चुनौतीपुर्ण कार्य है। उन्होंने बताया कि श्रम विभाग द्वारा श्रमिक एवं श्रमिकों के परिवारों के स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं उत्थान के लिए लगभग 72 योजनाएं संचालित की जा रही है। सभी योजनाएं बेहतर ढंग से संचालित हो रही है। इससे श्रमिकों को लाभ मिल रहा है। इसके लिए मैं विभाग के अधिकारी-कर्मचारी को बधाई देता हूँ। उन्होंने कहा कि प्रदेश के विकासखण्डों में श्रम संसाधन केंद्र बनाए गए है। कोई भी श्रमिक यदि किसी समस्या को लेकर आते है तो वह निराश व हताश नहीं होना चाहिए। अधिकारी कर्मचारियों को संवेदनशीलता के साथ काम करते हुए ऐसे श्रमिकों के समस्याओं का शीघ्र निराकरण की दिशा में काम किया जाए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार श्रमिकों को निःशुल्क पंजीयन सहित अन्य सुविधाएं उपलब्ध करा रही है। कुछ सुविधाकेंद्रों में श्रमिकों से तय की गई राशि से अधिक राशि लिये जाने की शिकायत आ रही है उस पर नियंत्रण रखने अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने श्रम संसाधन केंद्रों में भी पंजीयन आदि की सुविधा उपलब्ध कराने पर जोर दिया। इस मौके पर श्री अग्रवाल ने मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के मंशानुरूप श्रमिकों के प्रकरणों के त्वरित निराकरण हेतु नवीन पोर्टल का शुभारंभ किया। इस पोर्टल के माध्यम से अब श्रमिकों के पंजीयन और योजनाओं के आवेदन सरल और सुगम माध्यम से प्राप्त होंगे। साथ ही श्रम संसाधन केंद्रों से प्राप्त होने वाले आवेदनों को सीधा विभागीय पोर्टल में जोड़ा गया है जिससे श्रमिकों को इसका त्वरित लाभ मिलेगा। कार्यशाला को श्रम आयुक्त श्री भीम सिंह और यूएनडीपी के छत्तीसगढ़ हेड श्री अमित कुमार ने भी संबोधित किया। कार्यशाला में अपर श्रमायुक्त श्रीमती सविता मिश्रा, श्री एस. एल. जांगड़े सहित प्रदेशभर के श्रम अधिकारी, श्रम निरीक्षक और यूएनडीपी व अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

स्वामी,मुद्रक,प्रकाशक,संपादक-संदीप तिवारी द्वारा अनंत विहार कालोनी,दलदल सिवनी मार्ग-मोवा रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित एवं छत्तीसगढ़ प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स अनंत विहार कालोनी,दलदल सिवनी मार्ग -मोवा रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित।
(पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिये जिम्मेदार) फोन:-9301031000, 0771-6556444 bharatbhaskar222@gmail.com